mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-65 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

07 मार्च 2025 शुक्रवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

फाइनल में भिड़ेंगे...
@ पेज 7

दिल्ली में ट्रांसपोर्ट व्यवस्था को बेहतर बनाने की कवायद शुरू

नई दिल्ली (एजेंसी)। रेखा गुप्ता की अगुवाई वाली बीजेपी सरकार ने दिल्ली परिवहन व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए मिशन मोड में काम करना शुरू कर दिया है। इसी कड़ी में परिवहन मंत्री ने राजधानी की परिवहन

● परिवहन मंत्री ने पेश किया 100 दिनों का रोडमैप

व्यवस्था के परिवर्तन के लिए 100 दिन की रूपरेखा पेश की है। दिल्ली के परिवहन मंत्री पंकज कुमार सिंह ने 100 दिन का यह रोडमैप पेश किया। परिवहन विभाग की ओर से जारी एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि इस योजना में अपंजीकृत वाहनों के खिलाफ सख्त अभियान और सड़क सुरक्षा नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए कठोर प्रवर्तन उपायों को लागू करना शामिल है। सिंह ने कहा, ''हमें दिल्ली की परिवहन व्यवस्था में सुधार के लिए सक्रिय दृष्टिकोण की आवश्यकता है। हमारा 100-दिवसीय एजेंडा तैयार है और हम परिणाम देने के लिए दृढ़ हैं।'' बयान के अनुसार, दिल्ली सचिवालय में एक उच्च स्तरीय बैठक हुई, जिसमें दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी), दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) और अन्य एजेंसियों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। बैठक में, मंत्री सिंह ने सड़कों से अपंजीकृत वाहनों को हटाने के लिए निर्णायक कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर दिया और अधिकारियों को बिना वैध फिटनेस प्रमाणपत्रों वाले वाहनों को ईंधन की आपूर्ति करने वाले ईंधन स्टेशन के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया। इसके अतिरिक्त, मंत्री ने भारी वाहनों द्वारा उल्लंघन को रोकने के उपायों की घोषणा की जो ई-चालान से बचने के लिए स्लिप रोड का उपयोग करते हैं। बयान में कहा गया है कि परिवहन प्रवर्तन को मजबूत करने के लिए, विभाग यातायात कानूनों का सख्त अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त कर्मियों को तैनात करेगा। शहर के परिवहन आधुनिकीकरण के तहत, सरकार टिकरी बॉर्डर, मुंडका और नरेला में तीन नये अंतर-राज्यीय बस टर्मिनल (आईएसबीटी) चालू करने की योजना बना रही है। इनसे मौजूदा आईएसबीटी पर भीड़भाड़ कम होने और क्षेत्रीय संपर्क में सुधार होने की उम्मीद है। मंत्री ने डीटीसी की वित्तीय सेहत पर भी बात की और अधिकारियों को वित्तीय घाटे से उबरने के लिए रणनीति तैयार करने का निर्देश दिया। हालांकि, उन्होंने स्वतंत्र वित्तीय प्रबंधन के लिए दिल्ली परिवहन अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (डीटीआईडीसी) की प्रशंसा की और इसकी वित्तीय स्थिति को और मजबूत करने का आग्रह किया। मुकुंदपुर-मौजपुर, आरके आश्रम-जनकपुरी पश्चिम और एरोसिटी-तुगलकाबाद कॉरिडोर सहित मेट्रो विस्तार परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए, सिंह ने अधिकारियों से मेट्रो संपर्क बढ़ाने के लिए उनके पूरा होने में तेजी लाने का आग्रह किया।

संक्षिप्त समाचार

ट्रंप की बेरुखी के बाद फ्रांस बना यूक्रेन का नया खेवनहार

पेरिस (एजेंसी)। अमेरिका द्वारा यूक्रेन के साथ खुफिया सूचना साझा करने पर रोक लगाने की घोषणा किए जाने के बाद फ्रांस कीव का नया मददगार बना है। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की को हर खुफिया सैन्य जानकारी मुहैया कराने का वचन दिया। इसके बाद फ्रांसीसी सेना ने इस युद्धग्रस्त यूरोपीय देश को

खुफिया सैन्य जानकारी उपलब्ध कराने लगा है। फ्रांस के रक्षा मंत्री सेबेस्टियन लेकॉर्नू ने कहा, ''हमारी खुफिया जानकारी संप्रभु है। हमारे पास ऐसी खुफिया जानकारी है जिसका लाभ हम यूक्रेन को दे रहे हैं।'' उन्होंने कहा कि यूक्रेन को सभी सैन्य सहायता निलंबित करने के अमेरिकी फैसले के बाद, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने उनसे अमेरिकी सहायता की कमी की भरपाई के लिए ''विभिन्न फ्रांसीसी सहायता पैकेज में तेजी लाने'' के लिए कहा। बता दें कि अमेरिका ने यूक्रेन की न सिर्फ सैन्य मदद रोकी, बल्कि उसकी दी जा रही खुफिया सैन्य जानकारी देने से भी इनकार कर दिया। इससे जेलेंस्की हताश हो रहे थे। मगर इस संकट की घड़ी में मैक्रों ने उनके कंधे पर हाथ रख दिया है। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने बुधवार को कहा कि वह महाद्वीप को रूस के खतरों से बचाने के लिए फ्रांस की परमाणु प्रतिरोध क्षमता का उपयोग करने की संभावना पर यूरोपीय सहयोगियों के साथ चर्चा करेंगे। परमाणु प्रतिरोध सिद्धांत के अनुसार परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्रों पर हमला नहीं किया जाना चाहिए, विशेष रूप से परमाणु हमला क्योंकि जवाबी परमाणु हमले की आशंका भी बेहद अधिक होती है। फ्रांस यूरोपीय संघ का एकमात्र परमाणु शक्ति संपन्न देश है।

ब्रिटेन ने कहा कि भारतीय विदेश मंत्री की सुरक्षा में चूक अस्वीकार्य

लंदन (एजेंसी)। जयशंकर की ब्रिटेन यात्रा के दौरान उनकी सुरक्षा में चूक मामले पर भारत की कड़ी आपत्ति को यूके ने भी गंभीरता से लिया है। ब्रिटेन ने कहा कि भारतीय विदेश मंत्री की सुरक्षा में चूक अस्वीकार्य है। यूके ने अपने बयान में कहा है कि मेट्रोपॉलिटन पुलिस ने स्थिति को संभालने के लिए तेजी से काम किया। ÷हम अपने अंतरराष्ट्रीय दायित्वों के अनुरूप अपने सभी राजनयिक

आगंतुकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। सुरक्षा बाधित करने के इस तरह के प्रयासों की हम कड़ी निंदा करते हैं। बता दें कि एस जयशंकर बुधवार को लंदन के चैथम हाउस में चर्चा के बाद बाहर निकल रहे थे, तभी एक व्यक्ति उनकी कार की ओर दौड़ा और पुलिस अधिकारियों के सामने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फाड़ दिया। ब्रिटेन ने इस घटना की कड़ी निंदा की है, जिसमें खालिस्तानी चरमपंथियों के एक समूह ने लंदन में विदेश मंत्री एस जयशंकर की यात्रा को बाधित करने का प्रयास किया। इस सुरक्षा उल्लंघन को लेकर भारतीय विदेश मंत्रालय ने कड़ी आपत्ति जाहिर की थी और इस मामले में ब्रिटिश सरकार से सख्त कार्रवाई की मांग की थी। ब्रिटेन के विदेश, राष्ट्रमंडल और विकास कार्यालय (एफसीडीओ) ने कहा कि सार्वजनिक कार्यक्रमों को बाधित करने का कोई भी प्रयास पूरी तरह से अस्वीकार्य है। गुरुवार को जारी एफसीडीओ के बयान में कहा गया, ÷हम विदेश मंत्री की यूके यात्रा के दौरान कल चैथम हाउस के बाहर हुई घटना की कड़ी निंदा करते हैं।

दिल्ली में मंगलवार को मीट शॉप का 'शटर डाउन', भाजपा विधायक का फरमान

दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के बीजेपी विधायक रविंद्र नेगी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जिसमें वह अपने विधानसभा क्षेत्र पटपड़गंज में मीट बेच रहे दुकानदारों को फरमान जारी करते नजर आ रहे हैं। उन्हें मंगलवार को मीट की दुकानें बंद रखने को कह रहे हैं। रविंद्र नेगी पटपड़गंज से आम आदमी पार्टी के अवध ओझा को हराकर विधानसभा पहुंचे हैं। उन्हें दिल्ली का मंत्री बनाए जाने की चर्चा थी। नेगी को मंत्री का पद तो नहीं मिला लेकिन वो लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं या बने रहना जानते हैं इसीलिए उन्होंने पहले दुकानदारों को धमकी भरे अंदाज में दुकान बंद करने को कहा। फिर इस वीडियो को अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर अपलोड कर दिया। रविंद्र नेगी ने ट्वीट कर मंगलवार को मीट की दुकानें बंद करने का फरमान जारी करने की वजह भी बताई। नेगी का कहना है कि उनके विधानसभा क्षेत्र पटपड़गंज में मीट की ये दुकानें मंदिर के पास हैं इसलिए मंदिर जाने वालों लोगों को परेशानी होती है। लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचे इसलिए उन्होंने दुकानदारों से हर मंगलवार को अपनी दुकानें बंद रखने को कहा है। वीडियो पोस्ट करते हुए बीजेपी विधायक ने लिखा है, 'पटपड़गंज विधानसभा में मंगलवार को खुली चिकन शॉप को बंद कराने का निर्देश दिया, क्योंकि यह मंदिर में आने-जाने वाले श्रद्धालुओं की भावनाओं को आहत कर रही थी। सनातन संस्कृति में धार्मिक स्थलों के आसपास शुद्धता और पवित्रता का विशेष महत्व होता है।

आम आदमी पार्टी ने सरकार पर साधा निशाना

'बस 3 दिन और', पूरी दिल्ली में लगाये गये पोस्टर

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी ने महिलाओं को 2500 रुपये देने की बात कही थी। चुनाव जीतने के बाद दिल्ली सरकार का गठन हो चुका है और मंत्रिमंडल का बंटवार भी हो चुका है। हालांकि अबतक महिलाओं को 2500 रुपये नहीं दिए गए हैं। इसे लेकर दिल्ली की पूर्व सीएम और आम आदमी पार्टी की नेता आतिशी लगातार दिल्ली की भाजपा सरकार पर निशाना साध रही हैं। वहीं आम आदमी पार्टी के दूसरे नेता भी लगातार सीएम रेखा गुप्ता और भाजपा पर निशाना साध रहे हैं। इस बीच दिल्ली में अलग-अलग जगहों पर पोस्टर लगाए गए हैं, जिसमें लिखा है, 'बस 3 दिन और, हर महिला को हर महीने 2500 रुपये।' आम आदमी पार्टी ने अधिकारिक एक्स हैंडल पर इन पोस्टरों को शेयर किया है। पोस्टर शेयर करते हुए आम आदमी पार्टी ने एक्स पर लिखा, %बस 3 दिन और, उसके बाद 8 मार्च को मोदी जी की गारंटी के अनुसार, दिल्ली की महिलाओं

के खातों में आ रहे 2500 रुपये। आम आदमी पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा सीएम रेखा गुप्ता को जगाने के लिए हल्ला बोल। बता दें कि इससे पूर्व दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री और दिल्ली विधानसभा में विपक्ष की नेता आतिशी ने दिल्ली सरकार के खिलाफ धरना प्रदर्शन किया था। उस दौरान आतिशी ने कहा, हम विरोध नहीं कर रहे हैं। हम इंतजार कर रहे हैं। मोदी जी ने कहा था कि दिल्ली की महिलाओं के बैंक खातों में 2500 रुपये की पहली किश्त जमा की जाएगी। उसमें सिर्फ 4 दिन बचे हैं।

आतिशी ने कहा कि पीएम मोदी ने कहा था कि 8 मार्च को 2500 की पहली किश्त आएगी। यह मोदी जी की गारंटी है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने गारंटी दी थी, उसी मुद्दे पर दिल्ली की अलग-अलग हिस्सों से महिलाएं आई हैं और उन्हें इंतजार है। मोदी जी ने कहा था कि अपने-अपने फोन को बैंक खाते से लिंक कर लें और 8 मार्च को 2500 आएंगे।

'मेरे बयान पर लोगों को गलतफहमी हुई'

मुंबई (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता सुरेश भैयाजी जोशी ने मराठी भाषा को लेकर हुए विवाद के बाद अपनी सफाई दी है। उन्होंने कहा मराठी मेरी मातृभाषा है और मुझे इस पर गर्व है। भैयाजी जोशी ने कहा, मुंबई के एक उपनगर में

एक कार्यक्रम में मेरे कहे हुए वक्तव्य को लेकर गलतफहमी हुई है। ऐसा मुझे लगता है। ये सवाल ही नहीं उठता है कि मुंबई की भाषा मराठी नहीं है। महाराष्ट्र की भाषा मराठी है और मुंबई महाराष्ट्र में है तो स्वाभाविक तौर पर मुंबई की भाषा मराठी है। उन्होंने कहा कि मराठी मेरी मातृभाषा है और मुझे इस पर गर्व है। मुंबई और महाराष्ट्र की भाषा मराठी है। भारत में विविध भाषाएं बोली जाती है। मुंबई में भी विभिन्न भाषाओं के बोलने वाले लोग रहते हैं। स्वाभाविक तौर पर यह अपेक्षा रहती है कि वे लोग भी मुंबई में रहकर मराठी सीखें। बुधवार को मुंबई के घाटकोपर क्षेत्र में एक कार्यक्रम में की गई टिप्पणी के बाद उनकी सफाई आई है। भैयाजी जोशी की टिप्पणी की विपक्षी शिवसेना (उबाठा) और कांग्रेस ने कड़ी आलोचना की थी। भैया जी जोशी ने बुधवार को कहा था, ''मुंबई में कोई एक भाषा नहीं है। मुंबई के हर हिस्से की अलग-अलग भाषा है। घाटकोपर इलाके की भाषा गुजराती है।

हिमाचल में दिल दहलाने वाला लैंडस्लाइड भरभराकर गिरा पहाड़

पीडब्ल्यूडी विभाग पूरी मुस्तैदी से रास्तों को बहाल करने में जुटा

चंबा (एजेंसी)। हिमाचल में खराब मौसम के कारण कई जगहों पर लैंडस्लाइड (भूस्खलन) का मामला सामने आया है। ताजा मामला चंबा जिले का है जहां पर चंबा तीसा मुख्य मार्ग पर भारी भूस्खलन का हैरान कर देने वाला वीडियो सामने आया है। वीडियो में देखा जा सकता है कि पहाड़ का एक हिस्सा भरभराकर गिर गया और वहां पर मौजूद कुछ लोग इसे देखते रह गए।

जानकारी के अनुसार, चंबा तीसा मुख्य मार्ग पर जगह-जगह पर लैंडस्लाइड हो रहा हैं जो रुकने का नाम नहीं ले रहा है। इसकी वजह से यहां रहने वाले लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है और रास्ते भी जगह-जगह बाधित हो रहे हैं। ऐसा पिछले दिनों हुई भारी बारिश के कारण हो रहा है। पहले ऐसा मंजर बरसात के दिनों में देखा जाता था, जो कि आजकल के मौसम में देखना पड़ रहा है। हालांकि पीडब्ल्यूडी विभाग पूरी मुस्तैदी से रास्तों को बहाल करने में जुटा है और कई रास्ते बहाल भी हो चुके हैं। पहले ऐसा मंजर बरसात के दिनों में देखा जाता था, जो कि आजकल के मौसम में देखना पड़ रहा है। हालांकि पीडब्ल्यूडी विभाग पूरी मुस्तैदी से रास्तों को बहाल करने में जुटा है और कई रास्ते बहाल भी हो चुके हैं। चंबा में बर्फबारी के चलते कई सड़कें बंद हैं, ऐसे में लोगों की परेशानी और बढ़ गई है। चंबा के पांगी में 10 घंटों तक बर्फ की मोटी परत पर मरीज को पीठ पर उठाकर तो कभी अस्थायी स्ट्रेचर को खींच कर युवाओं ने किलाड़ अस्पताल पहुंचाया। जनजातीय क्षेत्र पांगी के हुडान-भटोरी का यह मामला बताया जा रहा है। जनजातीय क्षेत्र पांगी के हुडान-भटोरी के 53 वर्षीय शेर सिंह अचानक चक्कर आने के बाद वह बेहोश हो गए। इसके बाद गांववालों ने उन्हें 16 किलोमीटर तक पीठ पर उठाकर तो कभी अस्थायी स्लेज पर बर्फ में खींचकर अस्पताल तक पहुंचाया। हैरानी की बात यह है कि मुख्यालय किलाड़ से महज कुछ दूरी पर हुडान पंचायत की सड़क अब तक बहाल नहीं हो पाई है।

सरकार पर खूब बरसीं बसपा सुप्रीमो मायावती

'मुफ्त अनाज देकर गरीबों को बनाया भिखारी, आर्थिक नीतियों पर भी फेल'

लखनऊ (एजेंसी)। हाल ही में बीएसपी से अपने भतीजे को बेदखल कर सुर्खियों में रहीं मायावती अब सरकार पर बरस पड़ी हैं। मायावती ने गुरुवार दोपहर प्रेस कॉन्फ्रेंस की और केंद्र सरकार और यूपी सरकार दोनों पर जोरदार हमला बोला। मायावती ने कहा कि सरकार आर्थिक नीतियों पर फेल साबित हुई है। वह बस धर्म विशेष को टारगेट करते रहते हैं। मायावती सरकार के फ्री में अनाज पर बोलीं।

मायावती ने प्रेस कॉन्फेंस में आगे सरकार के फ्री अनाज नीति पर भी सवाल उठाया और और कहा कि सरकार ने गरीबों को फ्री राशन यानी अनाज उपलब्ध कराकर भिखारी बना दिया है, सरकार ने गरीबों के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाई है। दलितों, पिछड़ों के साथ अन्याय हो रहा है। सरकार को अपनी संकीर्ण और जातिवादी सोच बदलनी होगी।

उन्होंने आगे कहा कि बीजेपी सरकार कांग्रेस की राह पर चल रही है। बीजेपी के अच्छे दिन लाने के लोक-लुभावने नारे महज नारे ही साबित हुए। कुछ पूंजीपति की

धनवान बन रहे हैं। ऐसे लोगों की ही संख्या दिन दोगुनी और रात चौगुनी हुई है। यह सरकार की पूंजीवाद का सबूत है। अमीरों को और अमीर बनाने के बजाए दलितों, पिछड़ों को 125 करोड़ लोगों की गरीबी दूर करना चाहिए, इससे इनके जीवन में सुधार होता। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा जो सरकार की गरीब विरोधी नीति का उदाहरण है।

बीएसपी सुप्रीमो ने कहा कि उत्तर प्रदेश में ऐसे हालात बिगड़े हैं कि इसे लेकर चिंता हो रही है। बसपा ऐसे लोगों को अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए ही अस्तित्व में आई। प्रदेश में 4 बार मेरी नेतृत्व में रही सरकार में सामाजिक परिवर्तन हुआ।

जानकारी दे दें कि मायावती ने पिछले दिनों प्रदेश मुख्यालय में एक बैठक में बड़ा फैसला लेते हुए अपने भतीजे आकाश आनंद को नेशनल कोऑर्डिनेटर पद से हटा दिया था। जिसे लेकर वह खूब सुर्खियों में रही थीं।

कुमार विश्वास की बेटी की शादी की रही जबरदस्त धूम

पीएम मोदी सहित कई बड़ी हस्तियों ने पहुंच कर दिया आशीर्वाद

उदयपुर (एजेंसी)। देश के नामी कवि और कथावाचक डॉ. कुमार विश्वास की बड़ी बेटी अग्रता शर्मा की शादी उदयपुर के लीला पैलेस में तीन दिवसीय कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुई। इस शाही शादी में वर-वधू पक्ष के निकट परिवारों के सदस्य ही उपस्थित रहे। यह लीला पैलेस में इस साल की पहली सेलिब्रिटी वेडिंग थी। शादी समारोह के पहले दिन सागर भाटिया और दूसरे दिन सोनू निगम ने लगभग तीन घंटे तक अपनी प्रस्तुति दी। तीसरे दिन प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर मौजूद रहे और उन्होंने भी अपने गीतों द्वारा वर-वधू को आशीर्वाद दिया। पिछले कुछ दिनों से उनकी बिटिया की शादी सोशल मीडिया पर जबरदस्त ट्रेंड कर रही है। पूरे कार्यक्रम के मेहमानों के लिए विविध प्रकार के व्यंजनों की जिम्मेदारी विश्वप्रसिद्ध शेफ संजीव कपूर ने संभाली। लग्जरी होटल में तीन दिवसीय विवाह समारोह के बाद 5 मार्च को दिल्ली

के अशोका होटल में वर-वधू आशीर्वाद समारोह का आयोजन किया गया जिसमें देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, उनकी कैबिनेट सहित लगभग हर क्षेत्र के सभी बड़े दिग्गजों ने शिरकत की। कार्यक्रम में सभी दलों के राजनेता उपस्थित थे। वर-वधू को आशीर्वाद देने के लिए राजनीति जगत से पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान सहित कई केन्द्रीय मंत्री व दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड एवं मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्रीगण भी उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में इंडिया टीवी के चेयरमैन एवं एडिटर-इन-चीफ रजत शर्मा भी शामिल हुए।

इस समारोह में भारतीय राजनीति से शामिल होने वाले लोगों की संख्या का अनुमान इस बात से भी लगाया जा सकता है कि वर-वधू को आशीर्वाद देने के लिए दिल्ली सहित कई राज्यों की पूरी कैबिनेट भी उपस्थित रही। सक्रिय राजनीति के दिग्गजों के साथ-साथ डॉ. कुमार विश्वास के निमंत्रण पर कई हिमाचल प्रदेश एवं सिक्किम के महामहिम राज्यपाल भी पधारे थे। देश के सबसे लोकप्रिय कवि के इस पारिवारिक उत्सव में सार्वजनिक स्थलों पर बहुत ही कम उपस्थित होने वाले देश के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल, हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस एवं सुप्रीम कोर्ट के कई जस्टिस भी शामिल हुए।

बीजेपी सांसद तेजस्वी सूर्या ने सिंगर शिवश्री स्कंदप्रसाद संग रचाई शादी

बेंगलुरु (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी के सांसद तेजस्वी सूर्या ने गुरुवार को एक निजी समारोह में कर्नाटक की प्रसिद्ध सिंगर शिवश्री स्कंदप्रसाद से शादी रचाई। यह शादी मीडिया की नजरों से दूर रही। इस शादी में केवल परिवार के करीबी सदस्य और चुनिंदा राजनीतिक सहयोगी ही शामिल हुए। कई राजनीतिक नेताओं ने इस खुशी के अवसर की झलकियां सोशल मीडिया पर शेयर कर नवविवाहित जोड़े को शुभकामनाएं दीं। प्रमुख उपस्थित मेहमानों में बीजेपी नेता अन्नामलाई, प्रताप सिम्हा और अमित मालवीय थे, जिन्हें शादी की तस्वीरों में देखा गया। कर्नाटक बीजेपी अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र और केंद्रीय मंत्री वी सोमन्ना भी इस अवसर पर उपस्थित थे, बाद में उन्होंने इस खुशी के पल को सोशल मीडिया पर शेयर किया। पारंपरिक शादी के बाद सूर्या के गृहनगर बेंगलुरु के गायत्री विहार मैदान में एक भव्य रिसेप्शन होने वाला है। शादी के बाद की रस्मों में 6 मार्च को काशी यात्रा, जेरिगे बेला मुहूर्त और लाजा होम शामिल होंगे। जीरिगे बेल्ला एक महत्वपूर्ण दक्षिण भारतीय विवाह रस्म है, जिसे मुहूर्त समय माना जाता है, जबकि लाजा होम एक हिंदू परंपरा है, जिसमें दुल्हन पवित्र अग्नि में तले हुए अनाज अर्पित करती है। शिवश्री स्कंदप्रसाद एक बहुमुखी कलाकार हैं, जिन्हें कर्नाटिक संगीत, भरतनाट्यम और दृश्य कला में महारत हासिल है, जो पारंपरिक और समकालीन अभिव्यक्तियों का सहज मिश्रण है। संगीत के क्षेत्र में उन्होंने गुरु ए.एस. मुरली से कर्नाटिक संगीत की शिक्षा प्राप्त की है और उन्होंने ब्रह्मा गाना सभा और कर्तिक फाइन आर्ट्स जैसे प्रतिष्ठित मंचों पर प्रदर्शन किया है।

भोपाल में वॉक फॉर हेल्थ वॉक फॉर अवेयरनेस का आयोजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल में 8 मार्च यानी अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दिन महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए वॉक फॉर हेल्थ, वॉक फॉर अवेयरनेस थीम पर विशेष वॉकथॉन का आयोजन किया जा रहा है। इसके साथ ही 9 मार्च को पीसीओएस विषय पर प्रदेश की पहली राष्ट्रीय कार्यशाला भी आयोजित की जा रही है। स्टेट नोडल डॉ. रचना दुबे ने बताया कि वॉकथॉन का आयोजन 8 मार्च को सुबह 7 बजे भोपाल के अटल पथ से किया जायेगा। रैली में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन भी करा सकते है। वहीं 9 मार्च को कुशाभाऊ ठाकरे अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर में प्रदेश की पहली पीसीओएस आधारित राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया जा रहा है। जहां पर प्रदेश के चिकित्सक पीसीओएस से बचाव, उपचार के नए तकनीक एवं अनुसंधान को साझा करेंगे। डॉ. रचना दुबे ने बताया कि कार्यक्रम में महिलाओं को गायनोकोलॉजी, इनफर्टिलिटी और कैंसर निवारण से संबंधित जानकारी दी जायेगी। उन्होंने कहा कि लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग ने महिलाओं में स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने एवं प्रजनन स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया है। वहीं 9 मार्च को होने वाले कांफ्रेंस में राष्ट्रीय स्तर के विशेषज्ञ मुख्यत: स्त्री रोग विशेषज्ञ, मधुमेह विशेषज्ञ, स्किन स्पेशलिस्ट, फिटनेस एक्सपर्ट, न्यूट्रिशनिस्ट, मनोरोग विशेषज्ञ, एक मंच पर एकत्रित होंगे। यह प्रदेश में पहली बार पीसीओएस आधारित कॉन्फ्रेंस होगी। डॉ. रचना दुबे ने बताया कि महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने और उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समाधान एक ही जगह पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शक्ति संपूर्ण महिला स्वास्थ्य केंद्र भोपाल जिले के कैलाश नाथ काटजू सिविल अस्पताल में विकसित किया जा रहा है। इस सेंटर में स्त्री रोग जैसे- पीसीओएस, फाइब्रॉइड, नि:संतानता और महिलाओं में होने वाले कैंसर के इलाज के साथ-साथ मेनोपॉज परामर्श की सुविधा होगी। साथ ही उन्नत तकनीक के माध्यम से इलाज कराई जाएंगी।

अच्छा परफार्म करने पर बांटेंगे 29 करोड़ के प्राइज

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। नगरीय निकायों को आय में बढ़ोतरी करने पर नगरीय विकास विभाग टॉप पर फार्मर निकायों को 29 करोड़ रुपए के प्राइज बांटेगा। यह प्राइज प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत दिए जाएंगे। पिछले 2 वित्तीय वर्षों में राजस्व और गैर राजस्व आय में हुई वृद्धि के प्रतिशत के अनुसार यह प्रोत्साहन राशि दी जायेगी। हर वर्ग में राजस्व आय के आधार पर 3-3 नगरीय निकायों का चयन किया जायेगा। नगरीय विकास व आवास विभाग द्वारा निकायों की आय बढ़ाने के लिए लगातार निर्देश देने के साथ उन्हें प्रोत्साहित भी किया जा रहा है। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय भी बैठकों में नगर निगम महापौर और स्थानीय निकायों के अध्यक्षों को अपनी निकायों को आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर बनाने के लिये निर्देश देते रहे हैं। चालू वर्ष में राजस्व आय में श्रेष्ठ कार्य करने वाले स्थानीय निकायों को पुरस्कृत करने के? लिये विभागीय बजट में 29 करोड़ 4 लाख रुपए का प्रावधान किया गया है। विभाग ने नगरीय निकायों को दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि उनकी आबादी के हिसाब से तय की है।

एनआरआई कॉलेज में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आगाज़-प्रोजेक्ट प्रदर्शनी में छात्रों ने दिखाई प्रतिभा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के एनआरआई इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन साइंस एंड टेक्नोलॉजी में आज से दो दिवसीय राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन शुरू हुआ। एमपीसीएसटी भोपाल और डीएसटी नई दिल्ली द्वारा समर्थित इस कार्यक्रम में संस्था के संस्थापक डी. सुबोध सिंह मुख्य अतिथि रहे। परियोजना प्रदर्शनी में आठ से दस कॉलेजों और स्कूलों के छात्रों ने भाग लिया। प्रोजेक्ट श्रेणी में देव चौधरी की टीम को प्रथम और हिमांशु की टीम को द्वितीय स्थान मिला। वर्किंग मॉडल में सत्य प्रकाश की टीम प्रथम और अजय कुमार शाह द्वितीय स्थान पर रहे। स्कूल स्तर की प्रतियोगिता में एनआरआई जीडीएस स्कूल के यमन ने प्रथम और वेन्यू स्कूल सेंट जॉर्ज करौंद के छात्रों ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम की शुरुआत एकेडमी डायरेक्टर डॉ. जगदीश राठी और प्राचार्य डॉ. पूरन गौर के उद्बोधन से हुई। पहले सत्र में सरकारी एमएलबी गर्ल्स पीजी कॉलेज के रसायन शास्त्र प्रोफेसर डॉ. धीरेन्द्र कुमार पटेल ने रमन स्पेक्ट्रा पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में वैज्ञानिक रंगोली प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। दूसरे सत्र में प्राइम मिनिस्टर एक्सीलेंस कॉलेज की फिजिक्स प्रोफेसर डॉ. अर्चना सिंह ने सर सी.वी. रमन के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंगों पर व्याख्यान दिया। इस दौरान निबंध लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों ने उत्साह से भाग लिया।

1000 से ज्यादा घरों के कनेक्शन काटे गए

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मार्च की क्लोजिंग को लेकर बिजली कंपनी ने बुधवार से सख्ती के साथ वसूली अभियान शुरू किया। अब तक कंपनी का अमला ही वसूली के लिए निकलता रहा है। लेकिन, बुधवार शाम पहली बार कंपनी के एमडी क्षितिज सिंघल स्वयं वसूली अभियान के लिए निकले और घर-घर पहुंचे। इस दौरान एक दिन में करीब 2 करोड़ का बकाया वसूला गया। भोपाल सिटी सर्कल में कुल 6.10 लाख बिजली उपभोक्ता हैं इनमें से 1.25 लाख (25 फीसदी) पर करीब 150 करोड़ रुपए बकाया है। सिटी सर्कल के नॉर्थ और ईस्ट डिवीजन के दायरे में पुराने शहर के कई इलाके आते हैं। इन दोनों संभागों के करीब 2.70 लाख उपभोक्ता में से 50 हजार ऐसे हैं, जो साल में 2, 3 बार ही बिजली बिल भरते हैं। इनसे वसूली के लिए एमडी ने निकलकर खुद कनेक्शन कटवाए। 1000 से ज्यादा घरों के कनेक्शन काटे गए। इस दौरान कई उपभोक्ताओं ने बिल जमा भी किया। सिर्फ उत्तर संभाग के इलाकों में 55 हजार लोगों पर 26.43 करोड़ रुपए बकाया है।

खुद कनेक्शन जोड़े तो धारा 138 में कार्रवाई बकायादारों के कनेक्शन काटने के लिए बिजली कंपनी की आईटी सेल ने आरसीडीसी मॉडयूल बनाया है। यदि उपभोक्ता बिजली बिल जमा किए बिना कनेक्शन जोड़ते हैं तो उन पर धारा 138 के तहत कार्रवाई की जा रही है। अपनी ही गड़बड़ी पकड़ी... शहंशाह गार्डन के मकान नंबर 14 का 2.81 लाख बकाया बताया था। एमडी ने जांच कराई तो पता चला कि उपभोक्ता को गलत राशि का बिल मिला था।

उन्होंने रिवाइज बिल देने के निर्देश दिए। एमडी सुदामा नगर के मकान नंबर 201 में दीपक कुमार के घर पहुंचे। यहां कनेक्शन पड़ोसी के बिजली मीटर से जुड़ा था। दीपक कुमार पर 35 हजार से अधिक बकाया होने पर कनेक्शन काटा गया था। एमडी ने बकायेदार पर केस दर्ज कराने के आदेश दिए। करोंद जोन में 20 से ज्यादा बड़े बकायादारों के मीटर और सर्विस केबल तक उखाड़ ली गई। यहां हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी निवासी मंसूर पर 944501 , समीर पर 963300, देवकी नगर के मोहम्मद अनवर पर 952000 और प्रेमलता 989711 रुपए बकाया था। भानपुर के विवेक कुमार साहू पर 1. 87 लाख रुपए से अधिक बकाया था। नव बहार कॉलोनी में दुलारे पर 61,260 रुपए बकाया हैं।। इन्हें बकाया बिल भरने के लिए एक दिन की मोहलत दी गई। शिवनगर के रिजवान को भी 78 हजार बकाए पर एक दिन की मोहलत दी गई।

16वें वित्त आयोग के साथ ग्रामीण एवं नगरीय निकायों और राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की हुई बैठक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। 16वें केंद्रीय वित्त आयोग के साथ बुधवार 5 मार्च को ग्रामीण, स्थानीय निकाय, नगरीय स्थानीय निकाय और राजनीतिक दलों के विभिन्न प्रतिनिधियों के बैठक हुई। बैठक में वित्त आयोग के अध्यक्ष डॉ. अरविंद पनगड़िया और सदस्यों ने सभी से चर्चा की। ग्रामीण स्थानीय निकायों, नगरीय निकायों के जन-प्रतिनिधियों और राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने आयोग के समक्ष अपने विचार और सुझाव भी रखे। बैठक में प्रदेश की नगरीय निकायों के प्रतिनिधि के रूप में चार नगर निगम के महापौर, इंदौर के महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, सतना के महापौर श्री योगेश ताम्रकार, खंडवा की महापौर श्रीमती अमृता यादव तथा भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय एवं 11 अन्य नगर पालिका तथा नगर परिषद के अध्यक्ष बैठक में उपस्थित हुए। प्रदेश के नगरीय निकायों को दिए जा रहे अनुदान में चुकी मध्यप्रदेश में

देश की सबसे अधिक जनजातीय जनसंख्या निवास करती है इसलिए उसे संज्ञान में रखकर अनुदान जारी करना और शहरीकरण में जनता को सेवा प्रदाय में तकनीकी उपयोग किए जाने को प्रेरित करने हेतु पृथक से अनुदान जारी किए जाने का अनुरोध किया गया।

एम.पी. ट्रांसको ऑपरेशनल एक्सीलेंस के लिये प्रतिष्ठित 11वें गवर्नेंस-नाउ पी.एस.यू. अवार्ड से पुरस्कृत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एम.पी. ट्रांसको) को अपने ट्रांसमिशन नेटवर्क में ऑपरेशनल एक्सीलेंस के लिये राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित 11वें गवर्नेंस-नाउ पी.एस.यू. अवार्ड से पुरस्कृत किया गया है। देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पी.एस.यू.) के प्रभावशाली योगदान को मान्यता देने के लिए समर्पित यह पुरस्कार मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एम.पी. ट्रांसको) को ऑपरेशनल एक्सीलेंस-''ऑटोमेशन एंड डिजीटल टेक्नॉलाजी'' केटेगरी में नवाचार एवं अत्याधुनिक तकनीकों के उत्कृष्ट क्रियान्वयन के लिये प्रदान किया गया है। दिल्ली में एम.पी. ट्रांसको को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार भारत सरकार के मानव संसाधन विकास और जल संसाधन, नदी विकास और गंगा कायाकल्प मंत्रालय के पूर्व राज्य मंत्री श्री सत्यपाल सिंह ने प्रदान किया, जिसे मुख्य अभियंता श्री संदीप गायकवाड़ ने प्राप्त किया। यह आयोजन प्रतिष्ठित संस्था गवर्नेंस-नाउ द्वारा आयोजित किया गया। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युमन सिंह तोमर एवं अपर मुख्य सचिव श्री नीरज मंडलोई ने एम.पी. ट्रांसको को इस उपलब्धि पर बधाई दी है। ट्रांसमिशन वाला देश का शुरूआती राज्य उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता श्री आर.एस. बघेल के विशिष्ट प्रयासों से ट्रांसमिशन लाइनों की ड्रोन से सघन पेट्रोलिंग करने वाला देश का शुरूआती राज्य है।

लाइनमैन दिवस पर नई दिल्ली में मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के तीन लाइनमैन हुए सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी कार्य क्षेत्र में निर्धारित मापदंडों पर उच्च प्रदर्शन करने वाले तीन लाइनमैन का सम्मान केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली में आयोजित लाइनमैन दिवस समारोह में किया गया। सम्मानित होने वालों में कंपनी के जूनियर इंजीनियर श्री संतोष कुमार अहिरवार को नोडल अधिकारी के रूप में सम्मानित किया गया है। साथ ही कंपनी कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर हरदा वृत्त में कार्यरत वरिष्ठ लाईन अटेंडेंट श्री रामदीन सेजकर, ग्वालियर शहर वृत्त अंतर्गत कार्यरत श्री अशोक बुनकर एवं श्री अर्जुन

बिनजावे को सम्मानित किया गया।

केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इंडिया हैबिटेट सेंटर नई दिल्ली में आयोजित लाइनमैन दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय सम्मान समारोह -2025 में मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के चार कार्मिकों को अवार्ड मिनले पर ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर तथा मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल ने सभी कार्मिकों को बधाई दी है।

गौरतलब है कि समारोह में देश की लगभग 70 डिस्कॉम, 28 ट्रांसमिशन कंपनियों तथा 25 जनरेशन कंपनियों ने भाग लिया। इसमें से मप्र मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड के चार कार्मिकों को हाई परफार्मिंग डिस्कॉम का अवार्ड मिला। कंपनी के कार्मिकों को यह अवॉर्ड हमेशा सुरक्षा किट प्रयोग किए जाने, निरन्तर सुरक्षा का ध्यान रखते हुए कार्य करने, तनाव रहित सेवा कार्य करते हुए सुरक्षा मानकों को बेहतरीन ढंग से अपनाने के लिये मिला है।

रैम्प योजना के तहत 40 महिला उद्यमियों का दो दिवसीय हैदराबाद दौरा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम भारत सरकार की रैम्प योजना के तहत मध्यप्रदेश की 40 मैन्युफैक्चरिंग से जुड़ी महिला उद्यमियों को हैदराबाद में 6 से 8 मार्च तक एक्सपोज़र विजिट पर भेजने की महत्वपूर्ण पहल की गयी है। मध्यप्रदेश के एमएसएमई विभाग का लघु उद्योग निगम इस महत्वपूर्ण दौरे में नोडल एजेंसी के रूप में साथ रहेगा। इस दौरे में महिला उद्यमी %फिक्की फ्लो इंडस्ट्रियल पार्क और वी-हब जैसे महिला औद्योगिक पार्कों का दौरा करेंगी और उन्नत कार्यप्रणाली, नवीनतम तकनीकों और उन्नत कार्य के नवीनतम तौर-तरीकों को करीब से देख और समझ सकेंगी। माना जा रहा है कि महिला उद्यमी को अपने उद्यम के उन्ननयन मे सहायता मिलेगी। इस दौरान प्रदेश की महिला उद्यमी देश की प्रतिष्ठित महिला उद्योगपतियों से भी मिलेंगी और अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए उनसे संवाद कर सकेंगी। इन महिला उद्यमियों का चयन प्रदेश के जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्रों के द्वारा किया गया है। यह 40 सदस्यीय दल भोपाल एवं इंदौर से विमान द्वारा हैदराबाद रवाना होगा। इस यात्रा का उद्देश्य महिला उद्यमियों को सफल महिला उद्यमियों से मिलने, उनके अनुभवों से सीखने और अपने व्यापार में नए विचार और तकनीक अपनाने के अवसर प्रदान करना है। पहले दिन हैदराबाद में सफल महिला उद्यमियों द्वारा अपने संघर्ष, उद्यमिता विकास और व्यवसाय में अपनाए गए नए तरीकों की जानकारी दी जाएगी। अगले दिन 7 मार्च को महिला उद्यमी %फिक्की फ्लो इंडस्ट्रियल पार्क% और %वी-हब% का दौरा करेंगी, जहां वे देश की चार प्रमुख महिला उद्यमियों के उद्योगों का अवलोकन करेंगी। महिला उद्यमियों को यहां नवीनतम तकनीकों, योजनाओं के क्रियान्वयन और औद्योगिक पार्क की कार्यप्रणाली को समझने का अवसर मिलेगा।

स्थानीय निकायों को आय में वृद्धि पर मिलेगी प्रोत्साहन राशि

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में नगरीय निकायों को अपनी आय में वृद्धि करने के लिये नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा लगातार निर्देश दिये जा रहे हैं। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने भी विभिन्न बैठकों में नगर निगम महापौर और स्थानीय निकायों के अध्यक्षों को अपनी निकायों को आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर बनाने के लिये निर्देश दिये हैं। इस वर्ष राजस्व आय में श्रेष्ठ कार्य करने वाली स्थानीय निकायों को पुरस्कृत करने के?लिये विभागीय बजट में 29 करोड़ 4 लाख रूपये का प्रावधान किया गया है।

प्रोत्साहन योजना में आय में वृद्धि करने वाली नगरीय निकायों को पिछले 2 वित्तीय वर्षों में राजस्व और गैर राजस्व आय में हुई वृद्धि के प्रतिशत के अनुसार प्रोत्साहन राशि दी जायेगी। नगरीय निकायों को संपत्ति कर, समेकित कर, नगरीय विकास उप कर एवं शिक्षा उप कर से प्रमुख रूप से आय होती है। इसके अलावा नगरीय निकायों को जल उपभोक्ता प्रभार, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रभार, भूमि भवन किराया, बिल्डिंग परमिशन फीस से भी आय होती है।

विभाग ने नगरीय निकायों को दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि उनकी आबादी के हिसाब से निर्धारित की है। प्रदेश के ऐसे नगर पालिक निगम, जिनकी जनसंख्या 5 लाख से अधिक है, उन्हें प्रथम स्थान पर रहने पर 4 करोड़, द्वितीय पर 2 करोड़ 50 लाख और तृतीय स्थान पाने पर 1 करोड़ 50 लाख रूपये की राशि प्रोत्साहन स्वरूप दी जायेगी। प्रदेश के जिन नगर पालिक निगम की जनसंख्या 5 लाख से कम है, उन्हें प्रथम स्थान पर आने पर 3 करोड़ रूपये, द्वितीय पर 2 करोड़ रूपये और तृतीय स्थान प्राप्त करने पर एक करोड़ रूपये की राशि दी जायेगी। प्रदेश की ऐसी नगर पालिका परिषद, जिनकी जनसंख्या एक लाख से कम है, उन नगर पालिका परिषद को आय वृद्धि पर पहले स्थान के लिये 2 करोड़ रूपये, द्वितीय स्थान के लिये 1 करोड़ 25 लाख रूपये, तृतीय स्थान के लिये 75 लाख रूपये की राशि दी जायेगी। प्रदेश की ऐसी नगर परिषद जिनकी आबादी 25 हजार से अधिक है, उन्हें प्रथम स्थान पर रहने पर एक करोड़ 25 लाख रूपये, द्वितीय स्थान पर 75 लाख रूपये और तृतीय स्थान पर रहने पर 50 लाख रूपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जायेगी।

प्रदेश की 25 हजार से कम आबादी वाली नगर परिषदों को राजस्व आय वृद्धि में प्रथम स्थान पर आने के लिये 75 लाख रूपये, द्वितीय स्थान पर आने के लिये 50 लाख रूपये और तृतीय स्थान पर आने के लिये 29 लाख रूपये की राशि दी जायेगी। प्रत्येक वर्ग में राजस्व आय के आधार पर 3-3 नगरीय निकायों का चयन किया जायेगा। नगरीय निकायों की राजस्व एवं गैर राजस्व आय का निर्धारित मापदंडों के अनुसार संचालनालय स्तर पर ई-नगर पालिका के विश्लेषण के बाद पुरस्कृत किया जायेगा।

राज्यमंत्री लोधी ने आरटीबी बर्लिन में मध्यप्रदेश पर्यटन के पवेलियन किया शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पर्यटन, संस्कृति और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने कहा कि पर्यटन किसी भी राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास की रीढ़ है। वर्तमान में पर्यटन उद्योग वैश्विक अर्थव्यवस्था में सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में पर्यटन अधोसंरचनाओं के निर्माण और पर्यटन सुविधाओं के विकास के लिए सतत प्रयास किए जा रहे है। राज्य मंत्री श्री लोधी ने द्बझक्क बर्लिन 2025 में भारत पवेलियन और मध्यप्रदेश पवेलियन का भव्य शुभारंभ किया। इस अवसर

पर जर्मनी में भारत के राजदूत श्री अजीत गुप्ते, अपर प्रबंध संचालक टूरिज्म बोर्ड सुश्री बिदिशा मुखर्जी भी उपस्थित रही। राज्य मंत्री श्री लोधी ने कहा कि द्बझक्क बर्लिन पर्यटन उद्योग के लिए एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्किंग और व्यापार मंच है, जो विगत 60 वर्षों से विश्व पर्यटन को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहा है। राज्य मंत्री श्री लोधी ने कहा कि मध्यप्रदेश के पर्यटन को आरटीब बर्लिन में वैश्विक बढ़ावा मिलेगा। मध्यप्रदेश, अपनी प्राकृतिक, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक और धार्मिक संपदा के लिए प्रसिद्ध है। 8 टाइगर रिज़र्व, 12 राष्ट्रीय उद्यान, और 25 से अधिक वन्यजीव अभयारण्य इसे देश का टाइगर स्टेट बनाते हैं। ऐतिहासिक धरोहरों की बात करें तो खजुराहो, सांची और भीमबेटका जैसे तीन महत्वपूर्ण स्थल यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं, जबकि 11 अन्य स्थलों को अस्थायी सूची में स्थान मिला है। आरटीब बर्लिन में मध्यप्रदेश पवेलियन को विशेष रूप से प्रदेश के नैसर्गिक सौंदर्य, समृद्ध संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

बीजेपी सांसद की बाउंड्री वॉल में टकराई कार

नशे में धुत था ड्राइवर, सांसद बोले- ट्रैफिक पुलिस कोई कार्रवाई नहीं कर रही

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी में बीजेपी सांसद डॉ. राजेश मिश्रा के आवास की बाउंड्री वॉल को एक शराबी ड्राइवर ने अपनी कार से टक्कर मार दी। हादसे के वक्त सांसद मिश्रा वहीं खड़े होकर जनता दरबार में लोगों की समस्याएं सुन रहे थे। घटना बुधवार रात करीब 11 बजे की है।

हादसे के बाद कार चालक को मौके पर मौजूद लोगों ने पकड़ लिया। आरोपी ड्राइवर नशे में धुत था। सूचना मिलते ही कोतवाली थाना प्रभारी पुष्पेंद्र मिश्रा पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंच गए। आरोपी चालक का मेडिकल टेस्ट कराने के बाद खिलाफ पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है।

सांसद बोले- ट्रैफिक पुलिस कोई कार्रवाई नहीं करती

इस घटना के बाद सांसद मिश्रा ने शहर की खराब यातायात व्यवस्था पर नाराजगी जताई। उन्होंने थाना प्रभारी यातायात रीता त्रिपाठी पर सवाल उठाए। सांसद ने कहा कि हादसे के 12 घंटे बाद भी उन्हें घटना की जानकारी नहीं थी। शहर में रोज जाम लगता है। खुलेआम शराब पीकर वाहन चलाए जाते हैं। ट्रैफिक पुलिस कोई कार्रवाई नहीं कर रही है। उन्होंने प्रशासन से यातायात व्यवस्था दुरुस्त करने और शराब पीकर गाड़ी चलाने वालों पर सख्त कार्रवाई की मांग की है।

दो बाइकों में आमने-सामने टक्कर

महिला के दोनों पैर टूटे, बेटे को मामूली चोट, आरोपी चालक फरार

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी में गुरुवार दोपहर करीब 2 बजे दो बाइकों में भिड़ंत हो गई। हादसे में बाइक पर पीछे सवार महिला को गंभीर चोट आई है। उसके दोनों पैर फ्रैक्चर हो गए। जबकि बेटे को हल्की चोट आई है। घटना निगरी गांव के जगत चौराहा पर हुई है। घटना के बाद दूसरा अज्ञात बाइक सवार मौके से फरार हो गया। घायल महिला को तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अस्पताल चौकी पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

घायल महिला के दोनों पैर फ्रैक्चर हुए% बताया जा रहा है कि घायल महिला उर्मिला जायसवाल निवासी निगरी गांव अपने बेटे रविंद्र जायसवाल की बाइक पर पीछे सवार होकर बाजार जा रही थी। इसी दौरान जगत चौराहे के पास सामने से आ रहे अज्ञात बाइक सवार ने टक्कर मार दी। हादसे में उर्मिला के दोनों पैर फ्रैक्चर हो गए, जबकि बाइक चालक बेटे रविंद्र हो हल्की चोट आई।

घायल महिला उर्मिला को आसपास के लोगों की मदद से तत्काल जिला अस्पताल लाया गया। जहां पर उसका इलाज चल रहा है। घटना के बाद तत्काल मौके से अज्ञात बाइक सवार फरार हो गए। पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। आरोपी को तक पहुंचने के लिए पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

कांग्रेस ने मंत्री प्रहलाद पटेल का मनगवां में किया पुतला दहन

मीडिया ऑडीटर, मनगवां (निप्र)। गुरुवार को म.प्र कांग्रेस कमेटी के आवाहन में एवं जिला कांग्रेस कमेटी रीवा के निर्देशन में ब्लाक कांग्रेस कमेटी गंगेव द्वारा प्रदेश सरकार के मंत्री प्रहलाद पटेल द्वारा अनैतिक शब्दो से म.प्र की जनता जनार्दन को सर्वाजनिक रुप से भिखारी कहने के विरोध में जिला कांग्रेस संगठन मंत्री एड0रवि तिवारी के नेतृत्व में प्रयागराज मोड़ मनगवां चौराहे में प्रदेश सरकार के मंत्री प्रहलाद पटेल का पुतला दहन कर विरोध प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर ब्लाक कांग्रेस कमेटी गंगेव अध्यक्ष बलराम गौतम, पार्षद अरविंद मिश्रा, संचिन रावत, मंडलम अध्यक्ष पुष्पेन्द्र वर्मा, शंकर राघव तिवारी लाला,जिला कांग्रेस समाज कल्याण प्रकोष्ठ प्रवक्ता पंकज शास्त्री, यूवक कांग्रेस अध्यक्ष प्रकाश तिवारी, एड0 सतेन्द्र पाण्डेय, सुनील पाण्डेय, भूपेन्द्र सिंह, श्रत्रुधन सिंह, सच्चू पाण्डेय, रामदरश पटेल, अखिलेश तिवारी, कमलेश सोनी, एड0 उमेश पाठक, एड0 शिवराम सोंधिया सहित काफी संख्या में कांग्रेस जन विरोध प्रदर्शन में उपस्थित रहे।

पटवारी को डेली 10 फार्मर आईडी बनानी होंगी

सिंगरौली कलेक्टर ने दिया आदेश, पंचायत भवनों में लगेंगे कैंप

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला ने किसानों की फार्मर रजिस्ट्री को लेकर निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने गुरुवार को जिले के सभी अधिकारियों को शत-प्रतिशत फार्मर रजिस्ट्री सुनिश्चित करने के आदेश दिए हैं।

भारत सरकार के कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने फार्मर आईडी जेनरेट करने की प्रक्रिया को अभियान के रूप में पूरा करने के निर्देश दिए हैं। इस कार्य के लिए प्रति कैंप 15,000 रुपए की राशि तीन किस्तों में दी जाएगी। फार्मर आईडी बनाने का लक्ष्य 20 मार्च 2025 तक निर्धारित किया गया है।

डेली 10 फार्मर आईडी बनानी होंगी: कलेक्टर के निर्देश के अनुसार, प्रत्येक पटवारी और डिजिटल क्रॉप सर्वे के लिए पंजीकृत स्थानीय युवा को प्रतिदिन 10 फार्मर आईडी बनाने होंगे। कैंप का आयोजन पंचायत भवन या स्थानीय निकाय कार्यालय में किया जाएगा। हर कैंप के लिए राजस्व और कृषि विभाग से एक-एक अधिकारी नोडल ऑफिसर के रूप में नियुक्त किए जाएंगे।

कल विशेष अभियान चलाया जाएगा: विशेष रूप से 7 मार्च को तहसील देवसर के सभी गांवों में विशेष अभियान चलाया जाएगा। फार्मर रजिस्ट्री एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें किसानों की जमीन से जुड़ी सभी जानकारियां एक पोर्टल पर अपडेट की जाती हैं। इस डेटा के आधार पर किसानों को सरकारी योजनाओं की जानकारी और लाभ मिल सकेगा।

बिना लाइसेंस के धड़ल्ले से बिक रही खाद बीज व कीटनाशक दवायें

मीडिया ऑडीटर, त्योंथर (निप्र)। प्रशासनिक लापरवाही के कारण पूरे अंचल में बिना लायसेंस के खुल आम खाद - बीज की दुकानें संचालित रही है। दुकानदारों के हौसले दिन प्रतिदिन बुलंद हो रहे हैं। साथ ही विक्रेता द्वारा गुणवत्ता हीन बीजों को अच्छी उपज देने वाला एवं अमानक खाद को मानक स्तर की बताकर किसानों को गुणवत्ता विहीन बीज व खाद को थमा देते है किन्तु उस बीज को बोने एवं खाद का प्रयोग करने पर अच्छी फसल न होने से किसान अपने आपको ठगा सा महसूस करते हैं। साथ ही दुकानदार के द्वारा किसानो को खरीदी गई खाद व बीज की रसीद भी नहीं देते जिससे उनकी शिकायत करने पर सुनवाई भी नहीं होती। खाद बीज की दुकानों में दुकानदारों के द्वारा शासन द्वारा निर्धारित खाद बीज उर्वरक की रेट सूची चस्पा न किये जाने से किसानों से मनमाना पैसा वसूलते हैं सूत्रों की माने तो पूरे जिले में लाइसेंसधारी से ज्यादा अवेध दुकानें संचालित है जहां नकली वह अमानक बीच खपाया जाता है। किसान दुकानदारों से अमानक खाद बीज व उर्वरकों की खरीदारी करते हैं लेकिन बुवाई के बाद बीज अंकुरित नहीं होता जिससे उन को आर्थिक नुकसान होता है दोबारा बीज खरीद कर बुवाई करनी पड़ती है दुकान दारों की शिकायत करने पर उन पर कोई कार्रवाई नहीं होती जिम्मेदार अधिकारी उन पर सख्त कार्य की कार्रवाई करने बजाय खाना पूर्ति कर चले जाते हैं जिससे दुकानदारों के हौसले दिन प्रति - दिन बुलंद हो रहे है। कई व्यापारी तो सरकार द्वारा प्रतिबंध कीटनाशक को भी अवैध तरीके से विक्रय कर रहे हैं यदि इसकी बारीकी से जांच की जाए तो बड़ा खुलासा हो सकता है।

बिना अनुमति के हूटर, वीआईपी स्टीकर वाली 32 गाड़ियां जब्त

ट्रैफिक पुलिस सुबह से लेकर शाम तक चलाया अभियान

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली में यातायात पुलिस ने गुरुवार सुबह 11 से दोपहर 2 बजे और शाम 4 से 5 बजे के बीच अभियान चलाया। इस दौरान अनधिकृत हूटर, फ्लैश लाइट, वीआईपी स्टीकर और गलत नंबर प्लेट वाली 32 गाड़ियों पर कार्रवाई की गई।

यातायात थाना प्रभारी दीपेंद्र सिंह के अनुसार यह अभियान भोपाल मुख्यालय के निर्देश पर चलाया गया। शहर के विभिन्न इलाकों में चेकिंग की गई। कई वाहन अवैध तरीके से फ्लैश लाइट का इस्तेमाल कर रहे थे। पुलिस ने सबसे पहले बिना अनुमति वाले सायरन लगे वाहनों को पकड़ा।

इसके अलावा 25 ऐसे वाहन भी जब्त किए, जिनमें अवैध वीआईपी स्टीकर लगे थे। इन वाहनों की नंबर प्लेट भी नियमों के अनुसार नहीं थी। यातायात प्रभारी ने लोगों से मोटर व्हीकल एक्ट का पालन करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि नियम तोड़ने वालों पर कार्रवाई जारी रहेगी।

प्रियंका केवट ने इंटरनेशनल में भारत का लहराया परचम

सीधी। सीधी जिले की बेटी प्रियंका केवट पिता शिवराज केवट माता सोनिया केवट पुराना स्टेट बैंक के पास पुलिस लाइन सीधी की हैं। प्रियंका ने एथेंस ग्रीस में दिनांक 28 फरवरी से 2 मार्च 2025 तक आयोजित एर ोपोलिस इंटरनेशनल ओपन वूशु चौंपियनशिप में 48 किलोग्राम भार वर्ग में सिल्वर मेडल जीतकर अपने देश का नाम रोशन किया। भारत से अलग-अलग राज्य के कुल 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया था जिसमें एक खिलाड़ी सीधी जिले की थी। इस प्रतियोगिता में 14 देशों ने भाग लिया था जिसमें भारत को 9 गोल्ड 8 सिल्वर 5 ब्राउंस मेडल प्राप्त हुए। प्रियंका ने अपनी जीत का श्रेय माता-पिता व कोच मानिंद शेर अली खान जिला खेल प्रशिक्षक खेल एवं युवा कल्याण विभाग जिला सीधी को दिया है।

दो साल से फरार बलात्कार का आरोपी गिरफ्तार

शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म करने वाले आरोपी को ओडिशा से पकड़ा

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर पुलिस ने युवती से बलात्कार के मामले में दो साल से फरार चल रहे 5000 रुपए के इनामी आरोपी को ओडिशा के सुंदरगढ़ से गिरफ्तार किया है। मामला 5 फरवरी 2023 का है। 27 वर्षीय पीड़िता ने कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। आरोपी आकाश नट (30) छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले के पत्थलगांव थाना क्षेत्र के शिवपुर गांव का रहने वाला है। वह पीड़िता के गांव में अपनी रिश्तेदारी में रहता था और शादी का झांसा देकर युवती से बलात्कार करता रहा। पुलिस ने आरोपी को गुरुवार को अनूपपुर कोर्ट में पेश किया।

विज्ञान प्रदर्शनी का हुआ आयोजन, बच्चों को किया गया पुरस्कृत

मीडिया ऑडीटर, त्योंथर (निप्र)। तहसील मुख्यालय में संचालित एम0पी0 पब्लिक हॉयर सेकेंडरी स्कूल में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें स्कूल में अध्ययनरत कक्षा छठवीं से बारहवीं तक के छात्र छात्राओं द्वारा अनेकों प्रकार के विज्ञान प्रदर्शनी प्रदर्शित किए गए जिसमें जल संरक्षण, प्राकृतिक जल शोधक, जल विद्युत ऊर्जा, अंतरिक्ष के बारे प्रदर्शनी लगाकर सहित अन्य विषयों पर विज्ञान प्रदर्शनी लगाकर बच्चों को जागरूक किया गया। विज्ञान प्रदर्शनी में महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षक लवलेश द्विवेदी की रही वही विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लेने वाले समस्त छात्रों को मुख्य अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया और स्कूली बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई ..मुख्य अतिथि के रूप में शासकीय स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय त्योंथर प्रोफेसर डॉक्टर मनीष प्रताप सिंह, डॉक्टर उमेश पटेल, डॉक्टर अभिषेक श्रीवास्तव, डॉक्टर श्रवण कुमार मौर्य, डॉक्टर दीपेंद्र तिवारी ने बच्चों को सम्मानित किया वही विद्यालय संचालक अजय श्रीवास्तव, डायरेक्टर साजू एस, प्रिंसिपल बीजू एस, शिक्षक लवलेश द्विवेदी, अमित कचेर, सैफ खान, भागवत सिंह, बृजेश सिंह, अनुराग शुक्ला सहित समस्त विद्यालय परिवार की उपस्थिति रहा।

ओवरब्रिज और अंडरपास बनेगा

सांसद ने निर्माण स्थल देखा, बोले- आवागमन के लिए वैकल्पिक व्यवस्था बनेगी

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले के धौहनी विधानसभा क्षेत्र के ग्राम भदौरा में रेलवे क्रॉसिंग का निर्माण होगा। रेलवे विभाग ने 20 फरवरी को रेलवे ओवरब्रिज और अंडरपास के निर्माण की स्वीकृति दी है।

सीधी सांसद डॉ. राजेश मिश्रा ने गुरुवार शाम 4 बजे को स्थल का निरीक्षण किया। इस दौरान धौहनी विधायक कुंवर सिंह टेकाम और रेलवे अधिकारी रतन लाल मीणा उपस्थित रहे। सांसद ने रेलवे अधिकारियों को समय सीमा में गुणवत्तापूर्ण कार्य करने के निर्देश दिए।

सांसद बोले- आवागमन के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की जाएगी: सांसद मिश्रा ने कहा कि निर्माण कार्य पूर्ण होने तक लोगों के आवागमन के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की जाए। क्रॉसिंग के दोनों तरफ रेलवे कर्मचारियों की नियुक्ति की जाएगी। इससे दुर्घटनाओं को रोका जा सकेगा।

ओवरब्रिज और अंडरपास के लिए किया संघर्ष: ग्रामीणों ने इस क्रॉसिंग के लिए लंबे समय से संघर्ष किया। उन्होंने सांसद, विधायक और उपमुख्यमंत्री को कई बार ज्ञापन सौंपा। समाजसेवियों ने रेलवे विभाग के खिलाफ धरना-प्रदर्शन किया। समाजसेवी आनंद सिंह ददुआ ने रेल रोको आंदोलन की चेतावनी दी थी।

सांसद मिश्रा ने आश्वासन दिया कि निर्माण कार्य पूरी गुणवत्ता और पारदर्शिता के साथ होगा। इस परियोजना से ग्रामीणों को आवागमन में सुविधा मिलेगी। ग्रामीणों ने सांसद और विधायक का आभार जताया है। उन्होंने कार्य शीघ्र शुरू करने की मांग की है।

किसानों का आंदोलन स्थगित, एनसीसीएफ को हटाया, अब नान करेगी गेहूं की खरीदी, होली के पहले होगा 90 करोड़ का अटका भुगतान

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल संभाग में किसानों के बकाया भुगतान को लेकर प्रशासन ने धान खरीदी में लापरवाही बरतने वाली एनसीसीएफ को रबी सीजन की खरीदी से बाहर कर दिया गया है। अब नागरिक आपूर्ति निगम (नान) गेहूं की खरीदी करेगा। इसके पहले किसानों ने भुगतान की मांग को लेकर आंदोलन की चेतावनी दी थी। लेकिन कलेक्टर के आश्वासन के बाद आंदोलन स्थगित कर दिया गया है।

एनसीसीएफ को शहडोल, उमरिया, अनूपपुर और बैतूल में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में धान खरीदी का काम सौंपा गया था। एजेंसी की लापरवाही के कारण 6 हजार से अधिक किसानों का 90 करोड़ रुपए का भुगतान लंबित है। धान की खरीदी 23 जनवरी को समाप्त हो चुकी है।

एनसीसीएफ ने परिवहन और मिलिंग का काम भी सही तरीके से नहीं किया। इसका नतीजा यह हुआ कि रबी सीजन के लिए किसानों ने पंजीयन में कम रुचि दिखाई। जिला आपूर्ति अधिकारी विपिन पटेल के अनुसार अब रबी सीजन की खरीदी नान करेगी।

कलेक्टर के आश्वासन पर माने: किसानों ने भुगतान की मांग को लेकर 7 मार्च से आंदोलन की चेतावनी दी थी। कलेक्टर डॉ केदार सिंह ने होली से पहले भुगतान का आश्वासन दिया है। इस आश्वासन के बाद किसानों ने आंदोलन स्थगित कर दिया है। किसान नेताओं का कहना है कि होली के बाद भी भुगतान नहीं मिला तो वे आंदोलन करेंगे।

छतरपुर टीआई ने खुद को गोली मारी, मौत

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर के कोतवाली प्रभारी अरविंद कुजूर ने अपने पेप्टेक टाउन स्थित आवास में खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। घटना गुरुवार शाम की है। शहर की कानून व्यवस्था को सुदृढ़ करने और अपराधियों में भय पैदा करने वाले कुजूर की इस कार्रवाई से पुलिस विभाग और शहरवासी स्तब्ध हैं। आत्महत्या के कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है।

पुलिस बल और विधायक मौके पर पहुंचे: घटना की सूचना मिलते ही मौके पर बड़ी संख्या में पुलिस बल पहुंच गया। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के साथ सदर विधायक ललिता यादव भी घटनास्थल पर मौजूद हैं। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

फार्मर आईडी बनाने अभियान चलाने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। अपर कलेक्टर ने जानकारी देकर बताया है कि फार्मर रजिस्ट्री अन्तर्गत प्रत्येक कृषक भूमिस्वामी को एक यूनिक आईडी भारत सरकार द्वारा जनरेट कर प्रदान किया जा रहा है, ताकि कृषकों को आसानी से केसीसी ऋण कम्प्यूटरीकृत प्रक्रि या के माध्यम से प्राप्त हो सके और हितग्राहीमूलक योजनाओं हेतु लक्ष्य निर्धारण एवं कम्प्यूटरीकृत प्रणाली से सत्यापन की प्रक्रिया सुनिश्चित की जा सके।

इसके अतिरिक्त कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के निर्देश दिनांक 17 फरवरी से अवगत कराया गया है कि मार्च 2025 के उपरांत पीएम किसान योजना का लाभ प्राप्त करने हेतु फार्मर आईडी अनिवार्य होगा। इसको दृष्टिगत रखते हुए युद्धस्तर पर समस्त पीएम किसान हितग्राहियों हेतु फार्मर आईडी बनाये जाने की कार्यवाही की जायेगी।

कक्षा 10 वी संस्कृत विषय में शामिल हुए 15599 परीक्षार्थी

कलेक्टर द्वारा गठित पैनल द्वारा 27 परीक्षा केंद्र में किया गया सघन निरीक्षण

जिले में संचालित है शांतिपूर्ण परीक्षा

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। हाई स्कूल 10 वी कक्षा की संस्कृत विषय की परीक्षा जिले के 66 परीक्षा केन्द्रो में आयोजित हुई जिसमें से 15952 दर्ज छात्रों में से 15599 विद्यार्थी परीक्षा में उपस्थित रहे, 353 विद्यार्थी परीक्षा में शामिल नही हुये। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा परीक्षा की सुचिता बनाये रखने हेतु निरीक्षण दल गठित किया गया है।

एसडीएम कुसमी प्रिया पाठक द्वारा परीक्षा केन्द्र शा.उ.मा.वि. भदौरा, कमछ, टमसार, कुसमी का निरीक्षण किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी डॉ पी एल मिश्रा द्वारा कंधवार, ममदर, हनुमानगढ का निरीक्षण किया गया। प्रवीण शुक्ला ए.डी.पी.सी. रमसा द्वारा परीक्षा केन्द्र रजडिहा, तरका, बहरी, बालक पतुलखी का निरीक्षण किया गया। एपीसी रमसा डॉ सुजीत कुमार मिश्र द्वारा हटवाखास, अमिलिया, बालक हिनौती एवं सिहावल परीक्षा केंद्र का निरीक्षण किया गया। नागेन्द्र सिंह जिला आपूर्ति अधिकारी द्वारा बम्हनी, हनुमानगढ, सेमरिया का निरीक्षण किया गया।

विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी सीधी द्वारा हडवडों, उपनी का निरीक्षण किया गया। विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी मझौली द्वारा गिजवार, पथरौला, मडवास का निरीक्षण किया गया। विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी सिहावल द्वारा अमिलिया, बालक पतुलखी का निरीक्षण किया गया। विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी रामपुर नैकिन द्वारा बालक चुरहट का निरीक्षण किया गया। पी.के. पाण्डेय द्वारा पोडी का निरीक्षण किया गया।

कन्ट्रोल रूम प्रभारी रामकृष्ण तिवारी ने जानकारी देते हुये बताया कि जिले में परीक्षा शांतिपूर्ण तरीके एवं व्यवस्थित रूप से संचालित है जिले किसी भी परीक्षा केन्द्र में बाहरी दबाव नही है। नकल प्रकरण निरंक रहा।

कार्यालय नगर पालिक निगम रीवा, जिला- रीवा (म.प्र.)

क्रमांक 347/निर्माण/न.पा.नि./2025 **रीवा, दिनांक 06.03.2025**

अनाधिकृत कालोनी विकास के संबंध में सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पालिक निगम रीवा द्वारा अनाधिकृत रूप से नियमित की जा रही अवैध कालोनियों के विरूद्ध म.प्र. नगर पालिका (कालोनी विकास) नियम 2021 में वर्णित प्रावधान कण्डिका 22 के तहत अवैध कालोनी निर्माणकर्ता के विरूद्ध कानूनी कार्यवाही की जा रही है। अत: निम्न अनाधिकृत रूप से विकसित की जा रही कालोनियों में क्रय किये गये भूखण्ड, कोई अन्तरण हेतु किसी भी प्रकार का करारनामा शून्य होगा। निम्न भूखंडों में कोई क्रय विक्रय किया जाना दण्डनीय अपराध माना जावेगा।

क्र.	वार्ड क्र. मोहल्ला	अवैध कालोनाइजर का नाम/पता	ग्राम/पटवारी /तहसील/हल्का	आराजी नं.	कुल रकवा
1	04 चोरहटा	1 श्री राम विश्वास सिंह पिता रामनाथ सिंह पता- ग्राम चोरहटा 2- श्री बसंत सिंह पिता श्री रामनाथ सिंह पता- ग्राम चोरहटा बगैरह	चोरहटा पटवारी हल्का चोरहटा हुजूर नगर	799/1 /1(5)	जुज रकवा

उपरोक्तानुसार सर्व साधारण एवं भूमि स्वामी अवगत होकर सूचित हों।

हेतु आयुक्त
नगर पालिक निगम
रीवा (मप्र)

विचार

1965 के हिंदी विरोधी आंदोलन की याद दिला रहे स्टालिन

हिंदी को लेकर तमिलनाडु की राजनीति का आक्रामक होना कोई नई बात नहीं है। हिंदी के विरोध में जिस तरह स्टालिन ने रोजाना आधार पर मोर्चा खोल रखा है, वह 1965 के हिंदी विरोधी आंदोलन की याद दिला रहा है। संवैधानिक प्रावधानों की वजह से 26 जनवरी 1965 को हिंदी को राजभाषा के तौर पर जिम्मेदारी संभालनी थी, जिसके विरोध में सीए अन्नादुरै की अगुआई में पूरी द्रविड़ राजनीति उतर आई थी। तब हिंदी विरोध के मूल केंद्र में तमिल उपराष्ट्रीयता थी। उसके लिए तब यह साबित करना आसान था कि उस पर हिंदी थोपी जा रही है। तब आज की तरह सूचना और संचार की सहूलियतें नहीं थीं, तब दक्षिण और उत्तर के बीच आज की तरह सहज संचार नहीं था, तब आज की तरह मीडिया का इंटरनेटी वितान नहीं था। लेकिन आज हालात बदल चुके हैं। लिहाजा इस संदर्भ में स्टालिन के मौजूदा हिंदी विरोध की तह में जाना जरूरी हो जाता है। चाहे तमिलनाडु का निवासी हो या फिर उत्तर भारत के किसी हिंदीभाषी इलाके का, उसके हाथ में अगर फोन है, उसमें अगर इंटरनेट का कनेक्शन है तो तय है कि उसकी उंगलियों के नियंत्रण में हिंदी और अंग्रेजी ही नहीं, दुनियाभर की भाषाएं हैं। इसलिए कम से कम सूचना और संचार के ऐसे माध्यमों पर किसी सरकार की वजह से भाषायी बंधन आज के दौर में हो भी नहीं सकता। इंटरनेट क्रांति के पहले भाषाओं के विस्तार में बाजार ने जो भूमिका निभाई, उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। आज का बाजार वर्ल्ड वाइड वेब यानी डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू के पंखों के सहारे कहीं और तेजी से फैल तो रहा ही है, फल-फूल भी रहा है। इसलिए हिंदी ही नहीं, किसी भी भाषा का विरोध अब दुनिया के किसी भी कोने में पूरी तरह न तो सफल हो सकता है और कोई दीवार उसे रोक सकती है। बेशक तमिलनाडु भाषायी स्तर पर अपनी अलग पहचान रखता है, लेकिन वह भी हमारे देश का हिस्सा है। मौजूदा स्थिति में तेजी से विकसित होता राज्य है और उसे अपने उत्पादन केंद्रों के लिए कामगारों की जरूरत है। जिसकी आपूर्ति उत्तर भारत के ही राज्य करते हैं। उसके निजी शैक्षिक केंद्रों के लिए विद्यार्थियों की भी जरूरत है। उत्तर भारत की जो शैक्षिक स्थिति है, उसकी असलियत सबको पता है। इस वजह से उत्तर भारतीय छात्रों की आवक भी तमिलनाडु में खूब है। ऐसे माहौल में वैसे तो हिंदी विरोध के औचित्य पर ही सवाल है। फिर भी स्टालिन विरोध कर रहे हैं तो उसके अपने कारण हैं।

कुंभ के बाद अब चार धाम यात्रा की तैयारी

कुंभ यात्रा लगभाग बीत गई। इसके बाद 30 अप्रैल से चार धाम यात्रा शुरू हो जाएगी। श्रद्धालुओं का जो काफिला कुंभ में दिखाई दिया, ऐसा ही कमोबेश चार धाम यात्रा में नजर आने की आशा है। कुंभ के सफल आयोजन की जिमेदारी जहां उार प्रदेश सरकार और वहां के मुयमंत्री योगी आदित्यनाथ की थी। ऐसी ही जिमेदारी चार धाम यात्रा में उारांचल की सरकार और यहां के मुयमंत्री पुष्कर सिंह धामी की होगी। पुष्कर सिंह धामी इस श्रद्धालुओं के रेले को किस तरह नियंत्रित करते हैं। इस यात्रा की किस तरह तैयारी करते है। इसकी योग्यता उन्हें प्रदर्शित करने का अवसर आ रहा है। हालाकि उारांचल में भाजपा की सरकार है। केंद्र उन्हें इस आयोजन में पूरी मदद करेगा, हर संभव मदद करेगा, किंतु श्रद्धालुओं के रेले को तो उारांचल सरकार को ही संभालना होगा। 26 फरवरी को महाकुंभ का अंतिम स्नान था।

शिवरात्रि तक 66 करोड 21 लाख श्रद्धालु स्नान कर चुके। अभी ये चलेगा। एक तरह से फरवरी के बाद भी कुछ समय ये चलेगा। आयोजन की समाप्ति तक एक अनुमान के अनुसार कुंभ स्नान करने वालों की संख्या 70 करोड़ के आंकड़े को पार कर जाएगी।

देश में दशकों के बाद सनातन ने करवट ली है। वह अपने आस्था स्थलों की ओर बेतहाशा दौड़ रहा है। राम मंदिर के निर्मित होते ही सनातन का ऐसा उदय हुआ जैसा कभी 1000 वर्ष पहले हुआ करता होगा। कुंभ आने का प्रचार पहली बार भारत से बाहर निकल दुनिया के तमाम देशों के टीवी चैनल्स तक पंहुच गया। अनेक देशों की सरकारों को निमंत्रण पत्र देने भारत के राजदूत गए। परिणाम स्वरूप, 60 करोड 21 लाख श्रद्धालु शिवरात्रि तक कुंभ स्नान चुके हैं। काशी-अयोध्या-चित्रकूट में जगह खाली नहीं थी। लोगों का जिस तरह प्रयागराज जाना लगातार चल रहा है उसे देखते हुए साफ हो जाता है कि कुंभ समापन तक 70 करोड़ श्रद्धालु संगम की डुबकी लगा चुके होंगे। इस रिकॉर्ड की मिसाल पूरी दुनिया में कभी नहीं मिलेगी।

ये महाकुंभ मार्च के प्रारंभ में समाप्त हो जाएगा। इसके बाद शुरू होगी चारधाम यात्रा।चार धाम यात्रा के दो धाम यमुनोत्री और गंगोत्री के पवित्र द्वार तीर्थयात्रियों के लिए अक्षय तृतीया के पवित्र दिन अर्थात 30 अप्रेल को खुलेंगे। यमुनोत्री और गंगोत्री के खुलने के कुछ ही दिनों बाद, मई के तीसरे या चौथे सप्ताह से अन्य दो मंदिर, केदारनाथ और बद्रीनाथ तीर्थयात्रियों से भर जाएँगे। जबकि, श्रद्धालु विजय दशमी के शुभ दिन बद्रीनाथ धाम को विदा करते हैं, उसके बाद दीपों के त्योहार दिवाली पर गंगोत्री धाम को बंद कर दिया जाता है और केदारनाथ और यमुनोत्री धाम एक साथ यम द्वितीया/भाई दूज पर बंद कर दिए जाते हैं। चूंकि चारधाम यात्रा घड़ी की सुई की दिशा में चलती है, इसलिए पवित्र यात्रा यमुनोत्री से शुरू होती है। उसके बाद क्रमश: गंगोत्री और केदारनाथ से गुजरते हुए चार धाम की पवित्र यात्रा बद्रीनाथ पंहुचती है।

इसमें को शक नहीं कि कुंभ यात्रियों का ये रेला, सनातन धर्म के श्रद्धालु दो माह मार्च और अप्रैल आराम करके अब चार धाम यात्रा की ओर निकलेंगे। उत्तराखंड वासियों के लिए अतिथि भगवान होता है लेकिन यहां ये कुम्भ जैसी भीड़ आई को कैसे संभालेगा, ये समय बताएगा। ये उत्तरांचल के बडी चुनौती होगा। श्रद्धालुओं को मुसीबत झेलनी पड़ सकती है। आज भी गर्मी के मौसम में कुछ साल से पहाड़ पूरी तरह पैक हो जाते हैं। लोगों को यहां न होटल में जगह मिलती है, न वाहन पार्किंग को स्थान। यहां का भूगोल, मौसम और इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी कई मोर्चे पर चुनौती पेश करती है। 2013 की केदारनाथ की दारुण आपदा को दुनिया देख-सुन चुकी हैं। इस बार उत्तराखंड सरकार और शासन को भी अतिरिक्त सतर्कता बरतनी होगी। चारधाम की यात्रा सबके लिए सुरक्षित और सुखद रहे,ये सरकार की जिम्मेदारी और भीड़ प्रबंधन पर निर्भर करता है।

राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह से शुरू हुआ कुंभ से उपजा सनातन का जोश और आस्था आजकल हिंदू समाज में हिलोरे ले रही है। कुंभ यात्रा के बावजूद इस बार शिवरात्रि पर कांवड़ियों की संख्या पर प्रभाव नहीं पड़ा। कुछ ज्यादा ही रहे। कावंड लाने वालों में इस बार महिलाएं और युवती भी ज्यादा नजर आईं। कांवड़ सेवा शिविर भी पहले से काफी ज्यादा नजर आए। कांवड यात्रा के प्रत्येक सौ कदम पर अबकि बार शिविर लगे थे। उनमें स्त्री-पुरूष मिलकर सेवा कर रहे थे। कांवड यात्रा के मार्ग पर लोग कारों में फल और बिसलरी की पानी की बोलते भरे खड़े थे। वे आने वाले कांवड़ियों को फल और पानी की बोतल बांट रहे थे। लेखक का जनपद हरिद्वार से सटा है। यहां डाक कांवड़ और कलश की बंहगी में जल लाने का प्रचलन नही है, किंतु इस बार डाक कांवड काफी संख्या में दिखाई दी। कुंभ यात्रा और कावंड यात्रा का यह सनातन का रेला आने वाली चार धाम यात्रा में भी दीखने की पूरी उम्मीद है।

उत्तरांचल सरकार को देखना है कि वह आने वाले चार धाम यात्रा के श्रद्धालुओं को कैसे संभालती है। अभी उसके पास यात्रा की तैयारी के लिए दो माह का समय है। मेरठ-पौड़ी नेशनल हाई-वे को फोर लेन करने का काम जारी है। उम्मीद है कि यात्रा की शुरूआत हरिद्वार और ऋषिकेश से कर उसकी वापसी पौड़ी मार्ग से होगी। ऐसा है तो उसे इस मार्ग का तैयार कराने के लिए केंद्र को अभी से दबाव देना होगा। राम मंदिर पारण प्रतिष्ठा के बाद देशवासी जिस तरह अपने तीर्थों की ओर दौड़ रहे हैं, उम्मीद है ऐसे ही श्रद्धालु चार धाम यात्रा में उमड़ेंगे। वे चार धाम यात्रा के लिए सरकारी साधन बस, ट्रेन और विमानों से आएंगे तो भारी तादाद में श्रद्धालु अपने वाहन और टैक्सियों से आएंगे। इन वाहनों कार, टैक्सियों और बसों को उत्तरांचल कैसे संभालेगा, उसे देखना है। प्रयागराज से तो इसलिए सब कुछ हो गया कि वहां आयोजन प्लेन में था। उत्तरांचल में तो सब कुछ पहाड़ों में है। वहां तो पार्किंग भी प्राय सड़क किनारे ही होती है। इस सब का प्रबंधं कैसे हो, इसकी व्यवस्था अभी से बनानी होगी।

दरअसल पिछले कुछ सालों देश में संपन्नता बढ़ी है। अब पंजाब, हरियाणा और दिल्ली एनसीआर के युवक रविवार और शनिवार का अवकाश देख शुक्रवार की शाम पिकनिक के लिए पहाड़ की ओर निकल जाते हैं। इसलिए पिछले कुछ साल में इन अवकाश के दिनों विशेषकर गर्मियों के मौसम में उत्तरांचल के होटल पूरी तरह भरे होतें हैं। सड़कों पर वाहनों का रेला होता है। पहाडों के होटल भरे होने और सड़कें पर जाम की खबर अखबारों की सुर्खियां बनती रहती हैं। ये ही गर्मी का मौसम चार धाम यात्रा का है। ऐसे में उत्तरांचल सरकार को प्रयास करना होगा कि ये सैलानी चार धाम यात्रा के स्थल गढ़वाल न आए। उन्हें कुमायूं और अन्य पर्वतीय प्रदेशों की ओर भेजना होगा। इसके लिए अभी से प्रचार करना होगा। जनता को जागरूक करना होगा और माहौल बनाना होगा।

अभी चार धाम यात्रा में दो माह का समय है। इसी समय में उत्तरांचल सरकार को तैयारी करनी है। भीड़ नियंत्रण का प्लान बनाना है। यात्रा के श्रद्धालु और उनके वाहन के पार्किंग की अभी से प्लानिंग करनी होगी। ये दो माह उसके लिए युद्धस्तर पर कार्य करने और व्यवस्था बनाने के लिए हैं। कुंभ यात्री के दौरान दिल्ली में हुए हादसे से रेलवे को सीख लेनी होगी। उसे भी बड़ी प्लानिंग करनी होगी।

निजी अस्पतालों में मरीजों के शोषण का जिम्मेदार कौन?

नई दिल्ली। चिकित्सा पेशा या स्वास्थ्य व्यवसाय कोई सामान्य पेशा नहीं है, बल्कि यह व्यक्तिगत जीवन और जनस्वास्थ्य से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है, जिसमें थोड़ी-सी भी लापरवाही किसी के जीवन पर भारी पड़ सकती है। वहीं, अपना या अपने परिवार का इलाज करवाने के चक्कर में यदि कोई व्यक्ति या परिवार लूट-पिट जाए तो यह भी प्रशासनिक नजरिए से अनुचित है। और ऐसे ही जरूरतमंद लोगों के पक्ष में सरकार और समाजसेवी संस्थाओं दोनों को अवश्य खड़ा होना चाहिए। यही वजह है कि जनस्वास्थ्य से जुड़े चिकित्सा पेशा या स्वास्थ्य व्यवसाय को सिर्फ कारोबारी लाभ के नजरिए से नहीं देखा जा सकता है, बल्कि यह एक सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व से जुड़ा हुआ विषय (पेशा) है, जिसे जनसेवा की भावना से किया जाए तो सरकार और संस्था दोनों को यश मिलेगा। भारतीय सभ्यता व संस्कृति तो शुरू से ही %सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया% की पक्षधर रही है। लेकिन देश में लागू नई आर्थिक नीतियों से उपजी नैतिक व कानूनी महामारी के दौर में जीवन का हर क्षेत्र प्रभावित हो रहा है।

दुर्भाग्य है कि चिकित्सा पेशा भी इससे वंचित नहीं है। चर्चा है कि महज आर्थिक लाभ के उद्देश्य से चिकित्सक महंगी जांच और अनावश्यक दवाइयां लिख रहे हैं। जानलेवा ऑपरेशन करने और अंगों के कारोबार तक से बाज नहीं आ रहे हैं। प्रशासनिक भ्रष्टाचार और न्यायिक जटिलताओं से ऐसे बहुत कम मामले हैं जो कोर्ट की दहलीज तक पहुंच पाते हैं। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट द्वारा राज्य सरकारों से यह कहना कि वे प्राइवेट अस्पतालों में मरीजों और उनके परिजनों के शोषण को रोकने के लिए उचित नीतिगत फैसला लें, देर आयद दुरुस्त आयद जैसा है। जनहित के इस सवाल पर राज्य सरकारों को तुरंत एक्शन में आना चाहिए। दरअसल, एक जनहित याचिका में आरोप लगाया गया था कि प्राइवेट अस्पतालों और उनकी फार्मेसी में एमआरपी से ज्यादा कीमत वसूली जा रही है। लिहाजा, कोर्ट ने इन अस्पतालों पर खुद से प्रतिबंध लगाने से इनकार किया और कहा कि ये संविधान में राज्य सूची का विषय है, इसलिए राज्य सरकारें ही इस पर व्यापक दृष्टिकोण से विचार कर सकती है। वही उचित गाइडलाइंस बना सकती हैं। इसमें संतुलित दृष्टिकोण अपनाना होगा, जिससे न तो मरीजों और उनके परिजनों का शोषण हो और न ही प्राइवेट अस्पतालों के कामकाज पर बेवजह प्रतिबंध लगे। बता दें कि यह जनहित याचिका सिद्धार्थ डालमिया (कानून के छात्र) ने दायर की है। इसमें कहा गया है कि %उनकी मां को पिछले साल कैंसर हुआ था और वह अब ठीक हो चुकी है। लेकिन उनके इलाज के दौरान प्राइवेट अस्पतालों में जबरन महंगी दवाएं खरीदनी पड़ीं। लिहाजा, इनकी गुहार है कि मरीजों और परिजनों को यह आजादी मिले कि वे अपनी पसंद की फार्मेसी से दवाएं, मेडिकल इक्विपमेंट आदि खरीद सकें। हालांकि, केंद्र ने कोर्ट में कहा है कि मरीजों पर विशेष फार्मेसी से दवाएं, मेडिकल इक्विपमेंट लेने की बाध्यता नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं देना सरकार की जिम्मेदारी है। भले ही बढ़ती आबादी के कारण सरकार को प्राइवेट

अस्पतालों की मदद लेनी पड़ी, लेकिन इसमें मरीजों का शोषण नहीं होना चाहिए। हालांकि, निजी हॉस्पिटल्स में जिस तरह से कैशलेस इलाज का प्रचलन बढ़ा है, इस धंधे में बड़ी-बड़ी निजी कैशलेस चिकित्सा बीमा कम्पनियां सामने आयी हैं, उन्होंने अस्पतालों के पैनल जारी किए हैं, उससे एक संगठित लूट और इसी चक्कर में मानव स्वास्थ्य, जनस्वास्थ्य से खिलवाड़ बढ़ा है। निजी अस्पतालों में तो चुपके चुपके नई नई दवाइयों का परीक्षण तक मानव शरीर पर हो जाता और किसी को भनक तक नहीं लगती। कुछ निजी अस्पताल व उनके डॉक्टर तो रक्त और मानव अंगों के अवैध कारोबार तक में शामिल हैं। ऐसे आरोप अक्सर मीडिया में उछलते रहते हैं। वहीं, जब से केंद्र सरकार गरीबों को आयुष्मान भारत कार्ड बनाने लगी है और 5 लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज की सुविधा देने लगी है, तब से नए नए घोटालों और अनैतिक करतबों की बाढ़ आ चुकी है। इन सबके दृष्टिगत सरकार भले ही एहतियाती कार्रवाई करती आई है, फिर भी निजी चिकित्सा सेवा प्रदाताओं में इन नियमों का खौंफ नहीं है। क्योंकि अक्सर चिकित्सक हड़ताल या दवा कारोबारी हड़ताल की धमकियां देकर हेल्थ सिंडिकेट से जुड़े लोग सरकार और प्रशासन को ब्लैकमेल कर लेते हैं। लेकिन सवाल फिर वही कि मानव स्वास्थ्य से खिलवाड़ कब तक। मसलन, जिस तरह से सिजेरियन बेबी का प्रचलन समाज में बढ़ रहा है, उससे कामकाजी महिलाएं भी भरी जवानी में बर्बाद हो रही हैं। ऐसे ही कई अन्य अस्वास्थ्यकर प्रचलन समाज में बढ़े हैं। किंतु हमारा स्वास्थ्य प्रशासन जनहित के दृष्टि से उतना संवेदनशील नहीं बना है, जितना उसे होना चाहिए। अन्यथा मिलावटी खाद्य पदार्थ, मिलावटी दवाइयों की बिक्री की बात सामने नहीं आती। याचिकाकर्ता ने भी दिलचस्प घपले की ओर इशारा किया है, लिहाजा कोर्ट का निर्देश समयोचित है। राज्य सरकारें जितनी जल्दी जग जाएं, केंद्र सरकार भी यथोचित जांच एजेंसी बनाए, अन्यथा इस गोरखधंधे पर काबू पाना मुश्किल है। गंदा है पर धंधा है, वाला जुमला से चिकित्सा पेशा जितना दूर रहे, उतनी उसकी साख बची रहेगी।

टीचर ने की स्टूडेंट की हत्या, लिव-इन में रहते थे

कोरबा में अधजली लाश मिली, शादी के 15 दिन बाद छोड़ दिया पति का घर

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। कोरबा के पाली थाना क्षेत्र के चैतुरगढ़ पहाड़ पर महिला की मिली अधजली लाश मामले में पुलिस ने आरोपी मिलन दास को हिरासत में लिया है। आरोपी पेशे से शिक्षक है और उसका महिला के साथ अवैध संबंध था। महिला शादी के बाद अपने पति को छोड़ आरोपी शिक्षक के साथ लिव-इन में रह रही थी। दोनों के बीच विवाद बढ़ने पर शिक्षक ने उसकी हत्या कर दी और सबूत मिटाने के लिए शव को जला दिया। मृतक महिला की पहचान ग्राम लाद निवासी 28 वर्षीय शशि कला के रूप में हुई।

दरअसल, तीन दिन पहले पाली थाना क्षेत्र के चैतुरगढ़ पहाड़ के पास राम टोक पहाड़ पर एक अधजली लाश बरामद हुई थी। पुलिस ने महिला की पहचान करने की कोशिश की, तो पता चला कि महिला का नाम 28 वर्षीय शशिकला है, और वो ग्राम लाद की रहने वाली थी।

महिला का आरोपी शिक्षक के साथ अवैध संबंध था: पूछताछ में पता चला कि शशिकला जब लाद हायर सेकेंडरी स्कूल में 11वीं में पढ़ाई कर रही थी, तभी इसकी अपने शिक्षक मिलन दास के साथ बातचीत होती थी। वहां से कॉलेज में जाने के बाद भी शशिकला और आरोपी के बीच फोन से बातचीत होती थी। इस दौरान दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ गई और महिला का मिलन दास के साथ अवैध संबंध बन गया।

इसी दौरान जब घर वालों ने शशिकला की शादी की चर्चा की तो मिलन दास ने ही उसकी शादी करवाने में मुख्य भूमिका निभाई थी। करीब छह साल पहले शशिकला की शादी भुनेश्वर गोड़ से हुई थी। लेकिन महज 15 दिनों में ही वह ससुराल छोड़कर मायके आ गई और फिर मिलन दास के साथ कटघोरा में किराए के मकान में लिव-इन में रहने लगी।

जब इस बात की जानकारी शशिकला के घरवालों को मिली उन्होंने उससे संबंध तोड़ लिया। लेकिन शशिकला का भाई अशोक उससे बातचीत करता था। कभी-कभी मिलने घर भी जाता था।

अशोक ने बताया कि कुछ दिन पहले 27 फरवरी को जब वह अपनी बहन से फोन पर संपर्क करने की कोशिश कर रहा था, तो फोन बंद मिला। शक होने पर वह कटघोरा उसके घर पहुंचा, जहां उसे पता चला कि शशिकला और मिलन दास के बीच विवाद हुआ था। जब अशोक ने मिलन से शशिकला के बारे में पूछा, तो वो टालमटोल करने लगा।

पुलिस जांच में हुआ हत्या का खुलासा: अशोक को मिलन की बातों पर शक हुआ और उसने तुरंत पाली थाना में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस जांच में सामने आया कि 27 फरवरी को दोनों के बीच झगड़ा हुआ था, जिसके बाद आरोपी मिलन ने शशिकला की हत्या कर दी।

हत्या के बाद मिलन दास ने अपने ड्राइवर की मदद से शव को गाड़ी में रखा और चैतुरगढ़ के पास राम टोक पहाड़ पर ले जाकर जला दिया। अधजला शव छोड़कर वे मौके से फरार हो गए।

भाई ने ब्रेसलेट से बहन के शव को पहचाना: इधर, शशिकला की तलाश करते हुए पुलिस को राम टोक पहाड़ पर महिला अधजली लाश मिली। पुलिस ने अधजले शव की जांच की, तो शव पर मौजूद ब्रेसलेट और अन्य चीजे मिली। पुलिस ने पहचान के लिए शशिकला के भाई को अशोक को बुलाया।

अशोक ने ब्रेसलेट और बॉडी से मिले अन्य चीजों के आधार पर बहन को पहचान लिया। पहचान होने के बाद शव का पोस्टमार्टम कराया गया, लेकिन अशोक ने कहा कि वह अपनी बहन का शव गांव नहीं ले जाएगा, क्योंकि समाज ने उसे बहिष्कृत कर दिया है।

शिक्षक हिरासत में, पुलिस जुटा रही सबूत: पाली पुलिस ने मिलन दास को हिरासत में ले लिया है और उससे पूछताछ कर रही है। पुलिस अब हत्या से जुड़े साक्ष्य जुटाने और ड्राइवर की भूमिका की भी जांच कर रही है।

डिवाइडर तोड़कर ट्रक से टकराई कार, 5 की मौत

जेसीबी से निकालनी पड़ी लाशें, नारायणपुर में ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटी, 3 की गई जान

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर में ट्रक और एक्सयूवी के बीच में भीषण टक्कर में 5 लोगों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि, तेज रफ्तार कार डिवाइडर तोड़कर सामने से आ रहे ट्रक से जा टकराई। टक्कर इतनी खतरनाक थी कि, कार में फंसे शवों को जेसीबी की मदद से निकालना पड़ा।

हादसे का सीसीटीवी वीडियो भी सामने आया है जिसमें बेकाबू कार डिवाइडर तोड़कर रॉन्ग साइड जाते दिख रही है। बताया जा रहा है कि, टायर फटने से ये हादसा हुआ है। मामला मंदिर हसौद थाना इलाके का है।

वहीं, नारायणपुर जिले में भी सड़क के गड्ढों से ट्रैक्टर ट्रॉली बेकाबू होकर पलट गई। इस हादसे में 3 लोगों की मौत हो गई है, जबकि 12 घायल हैं। घायलों में 2 की हालत नाजुक बनी हुई है।

नई लेदरी के नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं पार्षदगणों को मुख्य अतिथियों के बीच संयुक्त कलेक्टर ने दिलाई शपथ

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिला के नगर पंचायत नई लेदरी में शपथ ग्रहण के लिए भव्य समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें अनेकों सम्माननीय अतिथियों की गरिमामई उपस्थिति रही। यह आयोजन नगर पंचायत नई लेदरी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं पार्षदगणों के शपथ ग्रहण समारोह के रूप में ऐतिहासिक बन गया। इस कार्यक्रम का उद्बोधन संयुक्त कलेक्टर सी.एस. पैकरा ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता और छत्तीसगढ़ महतारी के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन और माल्यार्पण के साथ हुआ। तत्पश्चात माननीय अतिथियों का पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार भव्य स्वागत किया गया इस अवसर पर छत्तीसगढ़ सरकार के आदिम जाति विकास, अनुसूचित जाति विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास, कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री एवं जिला एमसीबी के प्रभारी मंत्री रामविचार नेताम के मुख्य आतिथ्य तथा विधायक एवं प्रदेश अध्यक्ष छत्तीसगढ़ माननीय किरण सिंह देव की अध्यक्षता एवं लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, विधायक भरतपुर-सोनहत माननीया रेणुका सिंह, विधायक बैकुण्ठपुर माननीय भैयालाल राजवाड़े, पूर्व संसदीय सचिव एवं जिलाध्यक्ष एमसीबी चम्पादेवी पावले की गरिमामयी उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के दौरान नगर पंचायत नई लेदरी की नवनिर्वाचित अध्यक्ष विरेंद्र सिंह राणा को संयुक्त कलेक्टर सी.एस. पैकरा द्वारा शपथ ग्रहण कराई गई। इसके साथ ही नगर पंचायत नई लेदरी के वार्ड क्रमांक 01 से वार्ड क्रमांक 15 तक के सभी पार्षदों को भी शपथ दिलाई गई। वहीं सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों ने अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करने और जनता की सेवा में समर्पित रहने का संकल्प लिया। शपथ ग्रहण के पश्चात मंचासीन अतिथियों को नगर पंचायत नई लेदरी के अध्यक्ष द्वारा प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथियों का सम्मान किया गया। समारोह का समापन नगर पंचायत नई लेदरी की (सीएमओ) अंजना वाईक्लिप द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ हुआ। उन्होंने सभी अतिथियों, पदाधिकारियों, कर्मचारियों और उपस्थित नागरिकों का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही इस आयोजन को सफल बनाने वाले सभी लोगों की सराहना की और नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं पार्षद गणों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। नगर पंचायत नई लेदरी के लिए यह दिन ऐतिहासिक बन गया, जब नव निर्वाचित नेतृत्व ने लोकतंत्र के प्रति अपनी निष्ठा और जनता की सेवा का संकल्प लिया।

अंडों से भरी पिकअप पलटी, फिसलन से बाइक सवार गिरे, गंदगी और बदबू से राहगीर हुए परेशान

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर के तिफरा फ्लाईओवर पर बुधवार रात अंडों से भरी एक तेज रफ्तार पिकअप अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में पिकअप चालक घायल हो गया।

वाहन में लदे सैकड़ों अंडों के फूटने से सड़क पर फिसलन हो गई। इस फिसलन की वजह से कई दोपहिया वाहन चालक गिर गए। सड़क पर फैली गंदगी और बदबू से राहगीरों को परेशानी का सामना करना पड़ा। सिविल लाइन पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति को संभाला। घायल चालक को अस्पताल भेजा गया। क्रेन की मदद से पलटी हुई पिकअप को हटाया गया और यातायात बहाल किया गया।

स्थानीय लोगों के अनुसार, एसबीआर कॉलेज के पास फ्लाईओवर पर यह पहला हादसा नहीं है। इस स्थान पर पहले भी कई दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं और कुछ की मृत्यु भी हो चुकी है। फ्लाईओवर के एप्रोच में तकनीकी खामियां हैं। नीचे उतरते समय वाहन अक्सर ब्रिज की रेलिंग से टकरा जाते हैं। इसके बावजूद प्रशासन ने अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। स्थायी समाधान के लिए कोई कार्रवाई नहीं की गई है।

भाई को कुल्हाड़ी से काटा फिर जला दी लाश

लड़कियों को छेड़ता था, इसलिए मार डाला, बिलासपुर में पहाड़ी के नीचे मिला था शव

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में चचेरे भाई ने युवक को कुल्हाड़ी से काटकर मार डाला, जिसके बाद साक्ष्य मिटाने के लिए लाश को पहाड़ी के नीचे लाकर जला दिया। पकड़े जाने के बाद आरोपी ने बताया कि मृतक युवक नशे में लड़कियों से छेड़छाड़ करता था, जिसके कारण उसने हत्या की। पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। पूरा मामला रतनपुर थाना क्षेत्र का है।

दरअसल, रतनपुर के सांधीपारा पहाड़ के नीचे 28 फरवरी की शाम अधजली लाश मिली थी। मृतक की पहचान सूरज खैरवार (33) के रूप में हुई। वह गांव के बाहर झोपड़ी बनाकर रहता था। युवक की हत्या की खबर मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई, जिसके बाद से पुलिस उसके परिजन सहित अन्य लोगों से पूछताछ कर जांच कर रही थी।

नशे में लड़कियों को छेड़ता था सूरज: पुलिस की जांच में पता चला कि मृतक सूरज आए दिन शराब पीकर गांव में हंगामा मचाता था। वह लड़कियों से छेड़खानी भी करता था। उसने 28 फरवरी को बस्ती में आकर शराब पी, जिसके बाद उसने गांव की दो युवतियों से छेड़खानी की। युवतियों ने इसकी जानकारी सूरज के ही चचेरे भाई ओमप्रकाश उर्फ कोंदा खैरवार (19) को दी। युवतियों से छेड़खानी से नाराज ओमप्रकाश ने उसे समझाइश भी दी थी।

वारदात के बाद से फरार था चचेरा भाई: इसी आधार पर पुलिस ने संदेही ओमप्रकाश की जानकारी जुटाई, तब पता चला कि वो घटना के बाद से गायब है। लिहाजा, पुलिस ने उसकी तलाश शुरू कर दी। इस दौरान पुलिस ने उसे पकड़ने के लिए मुखबिर भी लगा रखी थी।

मंगलवार की रात वह अपने घर आया, तब पुलिस को इसकी खबर मिल गई। जिसके बाद पुलिस ने उसे हिरासत में लेकर पूछताछ की। उसने बताया कि छेड़खानी से मना करने पर सूरज उससे ही उलझने लगा।

नाराज ओमप्रकाश ने पहाड़ी के पास कुल्हाड़ी से सूरज के सिर पर हमला कर दिया। इससे उसकी मौत हो गई। उसने शव पर साड़ी डालकर जलाने का प्रयास किया। शव जलने से पहले ही भाग निकला। पुलिस ने आरोपी सूरज को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया है।

जंगल में छिपा था आरोपी: जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि ओमप्रकाश पर संदेह था। इसके आधार पर उसकी तलाश की जा रही थी। इस दौरान पता चला कि आरोपी को गांव के आसपास ही देखा गया है। तब उसके लिए गांव में ही मुखबिर तैयार किया गया। पुलिस गिरफ्त में आने के बाद आरोपी ओमप्रकाश ने बताया कि जंगल छिपकर आसपास घूम रहा था।

हिट एंड रन केस...मॉर्निंग-वॉक पर निकले युवक की मौत, थाने के सामने कार ने मारी टक्कर

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर में पुलिस स्टेशन के सामने हिट एंड रन केस का मामला सामने आया है। तेज रफ्तार कार ने मॉर्निंग वॉक पर निकले ऑटो ड्राइवर को पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। जिससे युवक करीब 10 फीट उछलकर दीवार से जा टकराया। सिर फटने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। मामला पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र का है। थाना प्रभारी योगेश कश्यप ने बताया कि, घटना आज (गुरुवार) सुबह करीब साढ़े 4 बजे की है। मृतक की पहचान मनोज पंसारी (43) निवासी शीतला मंदिर के पास पुरानी बस्ती के रूप में हुई है।

सिर फटने से लहूलुहान हुआ, मौत: दरअसल, बूढ़ातालाब की ओर से आ रही तेज रफ्तार कार ने युवक को टक्कर मार दी। दीवार से टकराते ही युवक का सिर बुरी तरह फट गया। जिससे तेजी से खून बहने लगा। कुछ ही मिनट में उसकी मौके पर ही मौत हो गई। सीसीटीवी वीडियो में साफ दिख रहा है कि, कार ड्राइवर ने एक्सीडेंट के बाद तेज रफ्तार में गाड़ी को ब्रेक भी मारा। लेकिन वो घायल युवक को उसी हालत में छोड़कर भाग गया। पुलिस को आशंका है कि, कार ड्राइवर ने शराब पी रखी होगी।

मॉर्निंग वॉक पर निकला था युवक: मृतक मनोज पंसारी मॉर्निंग के दो बच्चे भी हैं। घटना के बाद परिवार वालों का रो-रो कर बुरा हाल है। मनोज ऑटो चलाने का काम करता था। उस पर घर की जिम्मेदारी थी। फिलहाल, पुरानी बस्ती पुलिस आसपास के सीसीटीवी कैमरों की मदद से कार चालक की तलाश में जुट गई है।

बच्चे को जिंदा जलाया, उम्रकैद में बदली फांसी की सजा

मां से एकतरफा प्यार में मासूम की थी हत्या, हाईकोर्ट बोला-रेयर ऑफ द रेयरेस्ट नहीं

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। रायपुर में 4 साल के बच्चे को जिंदा जलाने वाले आरोपी युवक की फांसी की सजा को हाईकोर्ट ने उम्रकैद में बदल दिया है। चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा और जस्टिस रवींद्र कुमार अग्रवाल की डिवीजन बेंच ने कहा कि दोषी की उम्र 35 साल है और उसका कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है। ऐसे में मृत्युदंड की जगह उम्रकैद की सजा पर्याप्त होगी। बता दें कि रायपुर के 7वें अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ने तीन माह पहले आरोपी को मृत्युदंड की सजा सुनाई थी। इस फैसले की पुष्टि के लिए हाईकोर्ट में अपील की गई थी।

उरला थाना क्षेत्र में रहने वाली पुष्पा चेतन ने 5 अप्रैल 2022 को अपने चार साल के बेटे हर्ष कुमार चेतन की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उसने बताया कि पड़ोसी पंचराम उसके दोनों बेटों दिव्यांश और हर्ष को घुमाने ले गया था। कुछ देर बाद दिव्यांश को लौटा दिया, लेकिन हर्ष को अपने साथ ले गया। देर रात तक हर्ष घर नहीं लौटा तो परिवार ने उसकी तलाश शुरू की।

एक बच्चे को छोड़ा दूसरे को किया किडनैप: बच्चे के पिता जयेंद्र, उरला इलाके में पूर्व पार्षद अशोक बघेल के मकान में किराए से रहता है। जबकि, आरोपी पंचराम भी पड़ोस में किराए पर रहता था। उसने चार साल के हर्ष को किडनैप किया था। जिसके बाद पुलिस ने जांच में पंचराम का मोबाइल नंबर ट्रेस किया। उसका लोकेशन नागपुर मिला। 7 अप्रैल 2022 को पुलिस ने उसे नागपुर से गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में उसने बताया कि हर्ष की हत्या कर दी और शव को नेवनारा और अकोली खार के पास जला दिया। पुलिस ने 8 अप्रैल 2022 को पंचराम की निशानदेही पर अधजला शव बरामद किया। मृतक के पिता जयेन्द्र चेतन ने शव की पहचान की।

बच्चे की मां से एकतरफा प्यार करता था आरोपी: केस में पहले ही यह खुलासा हुआ था कि, वारदात को अंजाम देने वाला पंचराम बच्चे की मां से प्यार करता था। मां को हासिल करना चाहता था। इसी मकसद से बच्चे को रास्ते से हटाने के लिए उसने 4 साल के हर्ष को किडनैप किया।

नगर निगम चिरमिरी के नवनिर्वाचित महापौर एवं पार्षदों का शपथ ग्रहण समारोह हुआ संपन्न

चिरमिरी नगर को स्वच्छ, सुंदर, सुव्यवस्थित एवं समृद्ध शहर बनाने की दिशा में दृढ़ संकल्प के साथ करें कार्य : जायसवाल

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नगर पालिक निगम चिरमिरी के नवनिर्वाचित महापौर और पार्षदों का शपथ ग्रहण समारोह गुरुवार को नगर निगम कार्यालय परिसर में भव्य रूप से संपन्न हुआ। इस समारोह में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव, कैबिनेट मंत्री राम विचार नेताम, स्वास्थ्य मंत्री एवं मनेंद्रगढ़ विधायक श्याम बिहारी जायसवाल सहित कई गणमान्य नेता उपस्थित रहे। एमसीबी जिले के कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने महापौर रामनरेश राय सहित भाजपा के 27 पार्षदों सहित 2 निर्दलीय पार्षदों ने भी शपथ ली। वहीं कांग्रेस के 11 पार्षदों को कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने अलग से निगम सभा कक्ष में शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित पार्षदों को वार्डवार शपथ दिलाई। इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने सभी जनप्रतिनिधियों को बधाई देते हुए कहा कि नवनिर्वाचित महापौर और पार्षदगण अटल विश्वास पत्र में किए गए वादों को पूरा करने के लिए पूरी निष्ठा के साथ कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि चिरमिरी को स्वच्छ, सुंदर, सुव्यवस्थित और समृद्ध शहर बनाने की दिशा में सभी को मिलकर कार्य करना होगा। नगर निगम के पांचवें कार्यकाल के इस शपथ ग्रहण समारोह में जिले के प्रभारी और किसान कल्याण मंत्री रामविचार नेताम मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस दौरान स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, भरतपुर-सोनहत विधायक रेणुका सिंह, बैकुंठपुर विधायक भइयालाल राजवाड़े, भाजपा एमसीबी जिले की अध्यक्ष चंपादेवी पावले, योग आयोग के पूर्व अध्यक्ष संजय अग्रवाल, मंडल अध्यक्ष पुरुषोत्तम सोनकर सहित भाजपा के कई पदाधिकारी, कार्यकर्ता और जिला प्रशासन के अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

इस कार्यक्रम को चिरमिरी नगर के नए कार्यकाल की शुरुआत के रूप में देखा जा रहा है, जहां सभी नव-निर्वाचित जनप्रतिनिधि शहर को विकास की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध नजर आए। समारोह के उपरांत नगर निगम आयुक्त रामप्रसाद आचला ने सभी नव-निर्वाचित जनप्रतिनिधियों का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। यह कार्यक्रम न केवल एक शपथ ग्रहण समारोह था, बल्कि चिरमिरी के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में पहला कदम भी था, जहां जनता की उम्मीदों को साकार करने के लिए नगर सरकार ने अपनी जिम्मेदारी का औपचारिक रूप से आरंभ किया गया।

नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं पार्षदगणों ने ली शपथ, गरिमामय आयोजन में अतिथियों की रही उपस्थिति

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मनेन्द्रगढ़ में आज नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं पार्षदगणों का शपथ समारोह का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें अनेक सम्माननीय अतिथियों की उपस्थिति रही। यह आयोजन नगर पालिका परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं पार्षदगणों के शपथ ग्रहण समारोह के रूप में ऐतिहासिक बन गया। पूरे कार्यक्रम में परंपरा, संस्कृति और लोकतांत्रिक मूल्यों का अद्भुत समन्वय देखने को मिला। इस कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता और छत्तीसगढ़ महतारी के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन और माल्यार्पण के साथ हुआ। इसके पश्चात राज्यगीत की सुमधुर प्रस्तुति ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। माननीय अतिथियों का पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार भव्य स्वागत किया गया।

मंत्री और विधायकों की उपस्थिति रही गरिमामयी: इस अवसर पर छत्तीसगढ़ सरकार के आदिम जाति विकास, अनुसूचित जाति विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास, कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री एवं जिला एमसीबी के प्रभारी मंत्री माननीय रामविचार नेताम विशेष रूप से उपस्थित रहे। उनके साथ विधायक एवं प्रदेश अध्यक्ष भाजपा छत्तीसगढ़ माननीय किरण सिंह देव, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, विधायक भरतपुर-सोनहत रेणुका सिंह, विधायक बैकुण्ठपुर भैयालाल राजवाड़े, पूर्व संसदीय सचिव एवं भाजपा जिलाध्यक्ष एमसीबी माननीया चम्पादेवी पावले, पूर्व अध्यक्ष योग आयोग छत्तीसगढ़ शासन संजय अग्रवाल, एसडीएम लिंगराज सिदार, उप अभियंता पवन कुमार साहू एवं नम्रता सिंह, मिशन मैनेजर रुचि पाण्डेय, राजस्व उप निरीक्षक शिवनारायण मिंज और सहायक राजस्व निरीक्षक अमजद खान की गरिमामयी उपस्थिति कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रही थी।

नव निर्वाचित अध्यक्ष एवं पार्षदगणों ने ली शपथ: इस कार्यक्रम के दौरान नगर पालिका परिषद मनेन्द्रगढ़ की नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रतिमा सरजू यादव को एसडीएम लिंगराज सिदार द्वारा शपथ ग्रहण कराई गई। इसके साथ ही नगर पालिका के वार्ड क्रमांक 01 से 22 तक के सभी पार्षदगणों ने भी शपथ ली। सभी निर्वाचित जनप्रतिनिधियों ने अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करने और जनता की सेवा में समर्पित रहने का संकल्प लिया। इसके साथ ही शपथ ग्रहण के पश्चात मंचासीन अतिथियों को नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिमा यादव द्वारा प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। समारोह का समापन नगर पालिका मनेन्द्रगढ़ की मुख्य नगर अधिकारी (सीएमओ) मुक्ता सिंह चौहान द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ हुआ। उन्होंने सभी अतिथियों, पदाधिकारियों, कर्मचारियों और उपस्थित नागरिकों का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही इस आयोजन को सफल बनाने वाले सभी लोगों की सराहना की और नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं पार्षदगणों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

मोदी उत्तराखंड में- मुखवा में गंगा पूजा की

उत्तरकाशी (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुवार को उत्तराखंड दौरे पर हैं। पीएम सबसे पहले उत्तरकाशी के मुखवा पहुंचे। मुखवा को मां गंगा का मायका कहा जाता है। यहां उन्होंने मां गंगा के मंदिर में दर्शन-पूजन किया। इसके बाद बाइक रैली को रवाना किया। पीएम ने यहां व्यू पॉइंट से हर्षिल घाटी देखी। जनसभा को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि ठंड में जब देश के बड़े हिस्से में कोहरा होता है, सूर्य के दर्शन नहीं होते, तब पहाड़ों पर धूप होती है। ऐसे में कई लोग यहां धूप सेंकने आ सकते हैं। इसके लिए घाम तापो (धूप सेंको) पर्यटन हो सकता है। मैं कंपनियों से कहना चाहता हूं कि वे अपने बड़े-बड़े सेमिनार, कॉन्फ्रेंस के लिए उत्तराखंड आएं। पीएम बनने के तीसरे कार्यकाल में मोदी का यह उत्तराखंड का दूसरा दौरा है। इससे पहले वे 28 जनवरी को 38वें राष्ट्रीय खेलों का उद्घाटन करने उत्तराखंड आए थे। उत्तराखंड सरकार ने इस साल शीतकालीन पर्यटन शुरू किया है। छ्टरूपुष्पेंद्र धामी ने कहा - इस दौरे से अर्थव्यवस्था, होमस्टे टूरिज्म, बॉर्डर एरिया के गांव के डेवलपमेंट को गति मिलने की उम्मीद है।

कन्नड़ एक्ट्रेस के फ्लैट से 2 करोड़ का सोना जब्त

बेंगलुरु (एजेंसी)। कन्नड़ एक्ट्रेस रान्या राव को 3 मार्च को 14.2 किलो सोने के साथ बेंगलुरु इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर गिरफ्तार किया गया था। उन पर गोल्ड स्मगलिंग का केस दर्ज किया गया है। पुलिस ने बुधवार को रान्या के लावेल रोड स्थित आलीशान अपार्टमेंट की तलाशी ली। यहां से 2.1 करोड़ रुपए की ज्वेलरी और 2.7 करोड़ रुपए नकद भी बरामद किए। रान्या कर्नाटक पुलिस हाउसिंग कॉर्पोरेशन के छ्ठ्क्क रामचंद्र राव की सौतेली बेटी हैं। 3 मार्च की रात दुबई से बेंगलुरु लौटने के दौरान डायरेक्टरेट ऑफ रेवेन्यू इंटेलिजेंस ने उसे कैंपागौड़ा एयरपोर्ट पर 14.2 किलो सोने के साथ गिरफ्तार किया था। रान्या ने इसे अपने बेल्ट में छिपाकर लाई थी। डीजीपी रामचंद्र राव ने कहा कि उनका रान्या से कोई वास्ता नहीं है। उन्होंने कहा, मेरे करियर पर कोई काला धब्बा नहीं है। किसी भी अन्य पिता की तरह जब मीडिया के जरिए यह बात मुझे पता चली तो मैं हैरान हो गया। मुझे इनमें से किसी भी बात की जानकारी नहीं थी। मैं इससे अधिक कुछ नहीं कहना चाहता। रान्या अब हमारे साथ नहीं रह रही हैं। वे अपने पति के साथ अलग रह रही हैं।%

थ्री लैंग्वेज पॉलिसी, तमिलनाडु भाजपा ने सिग्नेचर कैंपेन शुरू किया

चेन्नई (एजेंसी)। नई शिक्षा नीति के तहत 3 लैंग्वेज पॉलिसी के समर्थन में तमिलनाडु भाजपा ने हस्ताक्षर कैंपेन शुरू किया। इस दौरान तमिलनाडु भाजपा प्रदेश अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने 3 लैंग्वेज पॉलिसी को समय की जरूरत बताई। अन्नामलाई ने स्टालिन सरकार से पूछा- 2006 से 2014 तक गठबंधन वालों ने एक भी ट्रेन का नाम तमिल आइकन के नाम पर क्यों नहीं रखा? वहीं भाजपा सरकार ने सेंगोल एक्सप्रेस की तरह कई ट्रेनों का नाम तमिल प्रतीकों पर रखा।

भगवान श्रीकृष्ण पाथेय के विकास के लिए राजस्थान सरकार के साथ मिलकर काम करेगी एमपी सरकार

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भगवान श्रीकृष्ण पाथेय के संदर्भ में मध्यप्रदेश और राजस्थान सरकार एकमत है। हम राजस्थान सरकार के साथ मिलकर श्रीकृष्ण पाथेय के विकास के लिए मिलकर काम करेंगे। भगवान श्रीकृष्ण के गुजरात गमन पथ के विकास के लिए हम गुजरात सरकार से सहयोग लेकर इस दिशा में काम करेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण का ईश्वरीय स्वरूप तो स्तुत्य है ही, हमारी सरकार उनके दूसरे महत्वपूर्ण पक्षों को भी समाज के समक्ष प्रकाश में लाएगी। इसमें भगवान श्रीकृष्ण द्वारा उज्जैन में शिक्षा ग्रहण करना, सुदामा से मित्रता निभाना, वनवासी से प्रेम और गुरू-शिष्य परम्परा की मिसाल कायम करने जैसे प्रसंग शामिल है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरुवार को (समत्व भवन) मुख्यमंत्री निवास में श्रीकृष्ण पाथेय के संबंध में विषय विशेषज्ञ समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि श्रीकृष्ण पाथेय के विकास के लिए सभी समितियों को सक्रिय किया जाए। पुरातत्वविदों, धर्माचार्यों एवं भगवान श्रीकृष्ण साहित्य के अच्छे लेखकों को भी इस समिति में जोड़ा जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि श्रीकृष्ण पाथेय के विकास के लिए भोपाल में आयोजित इस बैठक के अलावा उज्जैन और राजस्थान के जयपुर या भरतपुर या ब्रज या चौरासी कोस या अन्य किसी विशिष्ट स्थल पर समिति बैठकें की जाएं। इससे दोनों राज्यों में श्रीकृष्ण पाथेय के लिए सकारात्मक वातावरण का निर्माण होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पुरा इतिहास में भगवान श्रीकृष्ण का भारत देश (जम्बूद्वीप) के कई क्षेत्रों में आवागमन का उल्लेख मिलता है।

समिति भगवान श्रीकृष्ण के उन सभी गमन स्थलों को चिन्हित कर इनका अभिलेखीकरण करें। उज्जैन के सांदीपनि आश्रम को श्रीकृष्ण पाथेय के विकास एवं विस्तार के लिए केन्द्र बिन्दु बनाया जा सकता है।

रक्षा खरीद नीति बदलेगी, सुधार के लिए कमेटी गठित

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के सैन्य बलों का आधुनिकीकरण तेज करने के लिए रक्षा खरीद नीति में बड़े बदलाव की तैयारी है। अब से सैन्य सामान की खरीद फास्ट ट्रैक की जाएगी। रक्षा खरीद नीति में सुधार के लिए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कमेटी का गठन किया है। अभी हथियार व सैन्य प्लेटफॉर्म की खरीद में 8 चरण होते हैं। सबसे पहले आकलन करते हैं कि हथियार बाहर से क्यों खरीदना है। फिर खरीद के लिए सूचना आमंत्रित करना, प्रस्ताव मंगाना, टेक्निकल ट्रायल, फील्ड ट्रायल, कॉमर्शियल दावे मंगाना,

सबसे कम दाम वाला वेंडर चुनना जैसी प्रक्रियाएं हैं। इस पूरे काम में कम से कम 8 साल लग जाते हैं। कमेटी देखेगी कि यह प्रक्रिया एक-दो साल में कैसे पूरी हो सकती है।डीपीपी में परिवर्तन की मांग इसलिए जोर पकड़ रही है, क्योंकि सेना, नौसेना और वायु सेना को समय पर साजो-सामान नहीं मिल रहे। खरीद प्रक्रिया कई बार 15 से 20 साल तक खिंच जाती है। जो सामान खरीदने की प्रक्रिया आज शुरू हुई है, 10 साल में उसकी टेक्नोलॉजी पुरानी पड़ जाती है। इस साल सैन्य खरीद के लिए तीनों सेनाओं का बजट करीब एक लाख 80 हजार करोड़ रु. है। 5 साल में करीब 9 लाख करोड़ रु. का सामान खरीदना है। कमेटी तय करेगी कि कितना बजट स्वदेशी हथियारों के लिए रखें। डीपीपी में आखिरी बदलाव 5 साल पहले हुए थे। उसके बाद भी कई प्रोजेक्ट लटके हैं। मेक इन इंडिया पर नीति भी नए सिरे से तय की जाएगी। रक्षा मंत्रालय ने साल 2024 में पांच सैन्य सौदों पर दस्तखत किए थे।

फर्जी एनकाउंटर मामले में सीबीआई कोर्ट का फैसला,एक पूर्व पुलिस अधिकारी को उम्र-कैद, दूसरे को पांच साल की सजा, 32 साल पुराना मामला

चंडीगढ़ (एजेंसी)। तरनतारन में 32 साल पहले पुलिस ने दो लोगों को आतंकी बताकर एनकाउंटर में मारने का दावा किया था। लेकिन कोर्ट में यह एनकाउंटर फर्जी साबित हुआ। मोहाली की सीबीआई की स्पेशल कोर्ट ने दो पूर्व पुलिसकर्मियों को हत्या और अन्य आरोपों में सजा सुनाई है। कोर्ट ने तरनतारन के पट्टी में तैनात तत्कालीन पुलिस अधिकारी सीता राम (80) को आईपीसी की धारा 302 में उम्र कैद व दो लाख जुर्माना लगाया गया। एसएचओ पट्टी राज पाल (57) को आईपीसी की धारा 201, और आईपीसी की धारा 120 बी में पांच साल की कैद पचास हजार जुर्माना लगाया गया। यह

रकम मृतकों के परिवारों को मुआवजे के रूप में दी जाएगी। इसके अलावा पांच अन्य आरोपियों को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया गया। इस मामले में 11 पुलिस अधिकारियों पर अपहरण, अवैध हिरासत और हत्या का आरोप था, सुनवाई के दौरान चार आरोपियों की मौत हो गई। पांच को बरी कर दिया गया।

घर से बाहर निकलने पर नोंच-खा जाते हैं कुत्ते

बहराइच (एजेंसी)। सावधान, सावधान, सावधान...आपको सूचित किया जाता है कि आपके गांव के कुत्ते आदमखोर हो गए हैं। हमला कर रहे हैं। आप सभी लोग घर से जब भी निकलें तो हाथ में लाठी- डंडा लेकर...ये कुत्ते झुंड में रहते हैं, अकेले और निहत्था देखकर हमला कर देते हैं। बहराइच जिला प्रशासन यह अनाउंसमेंट गांव-गांव तक करा रहा है। बहराइच में भेड़िए और तेंदुए के बाद अब कुत्तों का आतंक है। खैरीघाट इलाके के शिवपुर ब्लॉक के 4 गांव मटेरा कला, बक्शीपुरा, रखौना, खैरीघाट में ग्रामीण डरे हुए हैं। बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे। लोग घरों में कैद हैं।गांवों में सन्नाटा है। अगर घर से निकलते भी हैं तो समूह में, वो भी हाथ में लाठी-डंडा और बल्लम लेकर। कुत्ते बच्चों पर ज्यादा हमलावर हैं। प्रशासन कुत्तों को पकड़ने के लिए प्रयास तो कर रहा है, लेकिन अभी तक कोई सफलता नहीं मिली है। लाउडस्पीकर से अनाउंसमेंट कराया जा रहा है। पिछले 10 दिनों से कुत्ते 4 अलग-अलग गांवों में हमले कर रहे हैं। एक मासूम को इतना नोचा कि उसकी मौत हो गई। चार गांवों में बच्चों समेत 15 से लोग घायल हैं। यहां पर कुत्तों को पकड़ने के लिए जाल लगाया गया है। फिर भी कुत्ते पकड़ में नहीं आ रहे हैं। आतंक बढ़ता देख प्रशासन लाउडस्पीकर से लोगों को सतर्क कर रहा है। कुत्तों ने बच्ची को नोच कर मार डाला शिवपुर ब्लाक का मटेरा कला गांव। यह बहराइच जिला मुख्यालय से 45 किमी दूर है। गांव की आबादी करीब 1500 है। भास्कर की टीम यहां पहुंची। पता चला कि इन दिनों लोग घर से बाहर नहीं निकल रहे हैं। गांव के बाहर प्रशासन ने जाल लगाया है। उसके बावजूद कुत्तों का आतंक रुक नहीं रहा है। 10 दिन से ज्यादा हो गए लेकिन अभी तक एक भी कुत्ता जाल में नहीं फंसा है।

सुप्रीम कोर्ट बोला- शादी का वादा तोड़ना रेप नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने एक मामले में कहा कि 16 साल तक लिवइन रिलेशनशिप में रहने के बाद कोई महिला रेप का आरोप नहीं लगा सकती। सिर्फ शादी करने का वादा तोड़ने से रेप का मामला नहीं बनता, जब तक यह साबित न हो जाए कि शुरुआत से ही शादी की कोई मंशा नहीं थी। महिला ने 2022 में अपने पूर्व लिवइन पार्टनर पर रेप का केस दर्ज कराया था। उसका आरोप था कि 2006 में पार्टनर जबरदस्ती उसके घर में घुसा और उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। बाद में शादी का झांसा देकर 16 साल तक उसका शोषण किया। फिर किसी दूसरी महिला से शादी कर ली। कोर्ट बोला- पढ़ी-लिखी महिला इतने साल धोखे में कैसे रह सकती है जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ ने फैसला सुनाते हुए कहा कि अगर कोई महिला इतने समय तक रिश्ते में रहती है, तो इसे धोखा या जबरदस्ती नहीं कहा जा सकता है। यह मामला लिवइन रिलेशनशिप के बिगड़ने का है, न कि रेप का। कोर्ट ने सवाल उठाया कि एक पढ़ी-लिखी और आत्मनिर्भर महिला इतने सालों तक किसी के धोखे में कैसे रह सकती है।

तेलंगाना टनल हादसा, 13 दिन से फंसे 8 मजदूर

नागरकुर्नूल (एजेंसी)। तेलंगाना के नागरकुर्नूल में 22 फरवरी को श्रीशैलम लेफ्ट बैंक कैनाल टनल की छत गिर गई थी। हादसे में 8 मजदूर पिछले 13 दिन से फंसे हुए हैं। मजदूरों के बचने की उम्मीद कम है, हालांकि तलाशी अभियान अभी भी चलाया जा रहा है। इंडियन एक्सप्रेस ने एक रिपोर्ट के हवाले से बताया- करीब 5 साल पहले टनल के कुछ फॉल्ट जोन और कमजोर चट्?टानों के खतरे को लेकर अलर्ट जारी किया था। दरअसल साल 2020 में एमबर्ग टेक एजी नाम की कंपनी ने एक सर्वे किया था। रिपोर्ट में बताया गया था कि 14 किमी लंबे इस टनल के 13.88 किमी से 13.91 किमी के हिस्से की चट्टानें कमजोर हैं। इस हिस्से में पानी भी भरा हुआ है। जमीन खिसकने का भी खतरा है। बचावकर्मियों के मुताबिक जिस हिस्से को रिपोर्ट में खतरनाक बताया गया था, वही हिस्सा गिरा है। सर्वे रिपोर्ट टनल बनाने वाली कंपनी जयप्रकाश

एसोसिएट्स लिमिटेड को भी दी गई थी। हालांकि राज्य सरकार के सिंचाई विभाग को इसकी जानकारी थी या नहीं, यह साफ नहीं है। सिंचाई विभाग के एक अधिकारी का कहना है कि उन्हें ऐसी किसी रिपोर्ट की जानकारी नहीं है। दूसरे रिपोर्ट में भी टनल में खामियां बताई गईं 2020 में एक अन्य स्टडी में सुरंग में खामियों की बात सामने आई थी।

खालिस्तान समर्थकों ने लंदन में जयशंकर की कार घेरी

अमृतसर (एजेंसी)। विदेश मंत्री एस जयशंकर की गाड़ी को लंदन में खालिस्तानी समर्थकों ने घेर लिया। उनमें से एक ने उनकी गाड़ी के सामने आकर तिरंगा भी फाड़ा। विदेश मंत्री इस समय लंदन में हैं। उन्होंने यहां चैथम हाउस थिंक टैंक के एक विशेष कार्यक्रम में हिस्सा लिया था।

इस कार्यक्रम के खत्म होने के बाद जैसे ही वे अपनी कार की तरफ बढ़े। वहां पहले से विरोध कर रहे खालिस्तान समर्थकों ने उन्हें देखकर नारेबाजी शुरू कर दी। इसके बाद एक शख्स तिरंगा लेकर उनकी कार के आगे खड़ा हो गया और रास्ता रोक लिया। इस दौरान उसने भारत के राष्ट्रीय ध्वज को फाड़ने जैसी शर्मनाक हरकत भी की। खालिस्तान समर्थक की तिरंगा फाड़ने की हरकत को देखते ही सुरक्षाकर्मियों ने उसे पकड़ लिया और गाड़ी से दूर ले गए। ये पूरी घटना विदेश मंत्री की सुरक्षा में चूक के तौर पर देखी जा रही है। जब जयशंकर चैथम हाउस में पहुंचे थे, उससे पहले ही खालिस्तानी समर्थक वहां मौजूद थे और सड़क के दूसरी तरफ खालिस्तानी झंडे लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। इसके बावजूद जयशंकर के बाहर आते समय सुरक्षा घेरा नहीं बढ़ाया गया।

इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। घटना से भारतीय समुदाय में आक्रोश है। इस घटना के बाद लंदन में भारतीयों ने विरोध जताया। लोग ब्रिटिश सरकार से मांग कर रहे हैं कि भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। भारत सरकार से भी इस मुद्दे को कूटनीतिक स्तर पर उठाने की उम्मीद है।

आबूरोड में ट्रॉले से टकराई कार, 6 लोगों की मौत

आबूरोड, सिरोही (एजेंसी)। सिरोही के आबूरोड में एक तेज रफ्तार कार ट्रॉले से टकरा गई। एक्सीडेंट में एक ही परिवार के 7 में से 6 लोगों की मौत हो गई। हादसे में एक महिला गंभीर घायल है। जालोर के रहने वाले कार सवार अहमदाबाद से लौट रहे थे। माउंटआबू सीओ गोमाराम ने बताया कि गुरुवार सुबह 3 बजे किवरली के पास एक्सीडेंट हुआ था।

टक्कर इतनी भीषण थी कि कार ट्रॉले नीचे घुस गई। गाड़ी के गेट तोड़कर घायलों को बाहर निकाला गया। मौके पर 4 लोगों ने दम तोड़ दिया था। वहीं, 2 की मौत आबूरोड के हॉस्पिटल में हुई। हाईवे पेट्रोलिंग की हेड कॉन्स्टेबल विमला ने बताया- एक्सीडेंट के दौरान आसपास के एरिया में जोरदार ब्लास्ट की आवाज भी सुनाई दी। हाईवे पर ही पेट्रोलिंग कर रही पुलिस वैन आवाज सुनकर सबसे पहले मौके पर पहुंची। पुलिसकर्मियों ने तुरंत घायलों को निकालने की कोशिश की, लेकिन कार का अगला हिस्सा बुरी तरह

पिचकने से शव फंस गए। क्रेन की मदद से ट्रोले में फंसी कार को बाहर निकाला गया। वहीं से गुजर रही एक बस को रुकवाकर उसमें से सरिया निकाला और दरवाजे को तोड़ा। दरिया देवी को तुरंत एम्बुलेंस से आबूरोड के हॉस्पिटल पहुंचाया। कार में केवल दरिया देवी की बॉडी में मूवमेंट थी, लेकिन कार बुरी तरह से पिचकने के कारण सभी लोग फंसे हुए थे। एसडीएम शंकरलाल मीणा ने बताया- हादसे में जालोर के कुम्हारों का वास में रहने वाले नारायण प्रजापत (58) पुत्र नरसाराम, उनकी पत्नी पोशी देवी (55) और बेटे दुष्यंत (24), ड्राइवर कालूराम (40) पुत्र प्रकाश चांदराई, उनके बेटे यशपाल (4) और जयदीप पुत्र पुखराज प्रजापत की मौत हो गई। हादसे में मरने वाले जयदीप की मां दरिया देवी (35) पत्नी पुखराज गंभीर रूप से घायल हो गईं।

हिमाचल के पहले डीजीपी का निधन

किन्नौर (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के पहले पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) आईबी नेगी को पैतृक गांव सांगला में राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई। उत्तर प्रदेश कैडर के 1958 बैच के आईपीएस अधिकारी नेगी को उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक और सराहनीय सेवा पुलिस पदक से सम्मानित किया गया था।

नेगी का शिमला में निधन हुआ। वे लंबे समय से बीमार थे। नेगी ने अपने करियर में कई महत्वपूर्ण पदों पर सेवाएं दीं। वे उत्तर प्रदेश में नैनीताल और लखीमपुर के पुलिस अधीक्षक रहे। इसके अलावा उन्होंने आईटीबीपी, सीआईएसएफ, एसएसबी, सीआईडी और दिल्ली के पुलिस आयुक्त के रूप में भी काम किया।

अंतिम संस्कार में कई वरिष्ठ अधिकारी और जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। इनमें डीआईजी दिग्विजय नेगी, एएसपी रतन नेगी, किन्नौर के उपायुक्त डॉ. अमित कुमार शर्मा, पुलिस अधीक्षक अभिषेक शेखर और कल्पा के एसडीएम डॉ. शशांक गुप्ता शामिल थे। साथ ही मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सोनम नेगी, पूर्व विधायक तेजवंत नेगी, कांग्रेस अध्यक्ष उमेश नेगी, भाजपा नेता सूरत नेगी और जिला परिषद सदस्य हितेश नेगी भी उपस्थित रहे।

फाइनल में भिड़ेंगे भारत और न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका टीम हुई बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। बुधवार को लाहौर में न्यूजीलैंड और साउथ अफ्रीका के बीच आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी दूसरा सेमीफाइनल मुकाबला खेला गया। जिसे न्यूजीलैंड ने 50 रनों से जीत लिया। इस जीत के साथ कीवी टीम फाइनल में पहुंच गई है। वही अब रविवार, 9 मार्च को दुबई में भारत और न्यूजीलैंड टीम फाइनल में खिताब के लिए भिड़ेंगी। भारत ने पहले सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया को हराकर फाइनल में एंट्री की थी। फिलहाल, दूसरे सेमीफाइनल में दक्षिण अफ्रीका ने धीमी शुरुआत की और फिर लगातार अंतराल पर विकेट गंवाए, जिससे न्यूजीलैंड ने मैच पर मजबूत पकड़ बना ली। दक्षिण अफ्रीका की टीम 50 ओवर में 9 विकेट खोकर 312 रन बना सकी। साउथ अफ्रीका की ओर से डेविड मिलर ने नाबाद 100 रन बनाए। न्यूजीलैंड के 363 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए सेंटनर (43 रन पर तीन विकेट) और ग्लेन फिलिप्स (27 रन पर दो विकेट) की बलखाती गेंदों के सामने दक्षिण अफ्रीका की टीम डेविड मिलर (नाबाद 100 रन, 67 गेंद, 10 चौके, चार छक्के) के शतक और रेसी वान डेर डुसेन

(69) तथा कप्तान तेंबा बावुमा (56) के अर्धशतक के बावजूद नौ विकेट पर 312 रन ही बना सकी। वान डेर डुसेन और बावुमा ने दूसरे विकेट के लिए 105 रन की साझेदारी भी की। न्यूजीलैंड ने इससे पहले रविंद्र (108 रन, 101 गेंद, 13 चौके, एक छक्का) और विलियमसन (102 रन, 94 गेंद, 10 चौके, दो छक्के) के शतक और दोनों के बीच दूसरे विकेट के लिए 164 रन की साझेदारी से छह विकेट पर 362 रन बनाए जो टूर्नामेंट के इतिहास का सर्वोच्च स्कोर है। ग्लेन फिलिप्स (नाबाद 49, 27 गेंद) और डेरिल मिचेल (49 रन, 37 गेंद) ने अंत में पांचवें विकेट के लिए 30 गेंद में 57 रन जोड़कर टीम का स्कोर 350 रन के पार पहुंचाया।

टीम ने अंतिम 10 ओवर में 112 रन जोड़े। दक्षिण अफ्रीका की ओर से लुंगी एनगिडी सबसे सफल गेंदबाज रहे जिन्होंने 72 रन देकर तीन विकेट चटकाए। कागिसो रबादा ने 70 रन पर दो विकेट हासिल किए। सेमीफाइनल के साथ ही पाकिस्तान में चैंपियन्स ट्रॉफी का अंत हो गया क्योंकि अब फाइनल नौ मार्च को दुबई में भारत और न्यूजीलैंड के बीच खेला जाएगा।

क्रिकेट की गली छोड़ अब फिल्मी गलियारों में नजर आएंगे डेविड वॉर्नर

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट डेविड वॉर्नर भारत को अपना दूसरा घर मानते हैं, इसे वह कई बार कह चुके हैं। वह बॉलीवुड और टॉलीवुड के बड़े फैन हैं, वह अक्सर सोशल मीडिया पर हिंदी या तमिल गानों पर रील बनाकर शेयर करते हैं। अब उनको लेकर एक पुख्ता खबर आई है, वह टॉलीवुड में डेब्यू करने जा रहे हैं। इसका खुलासा खुद एक प्रोड्यूसर ने किया है। डेविड वॉर्नर वेंकी कुदुमुला के निर्देशन में बन रही रॉबिनहुड फिल्म में अपने अभियन करियर की शुरुआत करने जा रहे हैं। एक्शन से भरपूर इस मनोरंजक फिल्म में वॉर्नर कैमियो भूमिका में दिखाई देंगे, जिससे उनके फैंस काफी उत्साहित हैं। इसकी पुष्टि खुद फिल्म के निर्माताओं में से एक वाई रविशंकर ने की है। उन्होंने एक अन्य फिल्म के प्रचार कार्यक्रम के दौरान इसकी पुष्टि की। निर्माता ने डेविड वॉर्नर को टॉलीवुड में लॉन्च करने को लेकर खुशी जाहिर करते हुए कहा किस हम अपने रॉबिनहुड के साथ डेविड वॉर्नर को भारतीय सिनेमा में लॉन्च करके बहुत खुश हैं। निर्माता ने आधिकारिक घोषणा से पहले इस बात का खुलासा करने के लिए निर्देशक वेंकी कुदुमुला से माफी भी मांगी है। रॉबिनहुड फिल्म में तेलुगु के फेमस एक्टर नितिन लीड रोल में दिखेंगे।

न्यूजीलैंड के कप्तान मिचेल सैंटनर ने फाइनल से पहले टीम इंडिया को ललकारा

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 अपने आखिरी पड़ाव पर है। जहां रविवार, 9 मार्च को भारत और न्यूजीलैंड के बीच खिताबी भिड़ंत होगी। बीते बुधवार न्यूजीलैंड टीम ने लाहौर में खेले गए दूसरे सेमीफाइनल में साउथ अफ्रीका टीम को 50 रनों से हराकर फाइनल में एंट्री की। इस जीत के साथ ही कीवी कप्तान मिचेल सैंटनर ने भारतीय टीम को चेतावनी देते हुए कहा कि भारत को उनके लिए तैयार रहना चाहिए। सेमीफाइनल मैच के बाद न्यूजीलैंड के कप्तान ने कहा कि, फाइनल में पहुंचना एक बेहतरीन एहसास है। हमें एक अच्छी टीम से चुनौती मिली। हमने भारत के खिलाफ एक बार फिर प्रयास किया है, और हम इसे फिर से करने के लिए उत्सुक हैं। कीवी टीम ने 2021 के वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में भारत को हराया था। इसके अलावा साल 2019 के वनडे वर्ल्ड कप में भारत को न्यूजीलैंड के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था।

फाइनल मुकाबला दुबई में खेला जाना है। मिचेल सैंटनर ने कहा कि, दुबई में होने और भारत को दबाव में लाने से हमें आत्मविश्वास मिला। आप समझ सकते हैं कि कौन सी चीजें काम करती हैं और कौन सी नहीं। मुझे लगता है कि गेंदबाजों ने अच्छी गेंदबाजी की और टॉप पर विकेट चटकाए। मुझे लगता है कि टॉस जीतना भी अच्छा रहेगा। इसके अलावा कप्तान सैंटनर ने मैट हेनरी की चोट पर अपडेट देते हैं कहा कि, ये खिलाड़ी फाइनल खेलेगा या नहीं इसका फैसला आने वाले कुछ समय में होगा।

टेबल टेनिस के दिग्गज शरत कमल ने संन्यास का किया ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के महान टेबल टेनिस खिलाड़ी अचंत शरत कमल भी उसी लिस्ट में शामिल हैं। दो शतक से भी लंबे करियर में उन्होंने देश के लिए कई मेडल जीतें। उन्होंने बुधवार को अपने शहर में और अपने करिबियों की मौजूदगी में संन्यासा का ऐलान किया। शरत ने 5 ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। चेन्नई में इसी महीने होने वाला वर्ल्ड टेबल टेनिस स्टार कटेंडर टूर्नामेंट उनका आखिरी टूर्नामेंट होगा। शरत के लिए ये मौका काफी खास है क्योंकि उन्होंने करियर की शुरुआत भी इसी टूर्नामेंट के साथ की थी। डब्ल्यूटीटी प्रतियोगिता यहां 25 से 30 मार्च तक खेली जाएगी। शरत ने कहा कि, मैंने अपना पहला अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट चेन्नई में खेला गया था, मैं अपना आखिरी अंतर्राष्ट्रीय मैच भी चेन्नई में ही खेलूंगा। पेशेवर एथलीट के तौर पर ये मेरा आखिरी टूर्नामेंट होगा। 2003 में अपना पहला राष्ट्रीय खिताब जीतने के बाद, उन्होंने रिकॉर्ड तोड़ 10 ये खिताब हासिल किया। 42 साल की उम्र में भी ये खिलाड़ी दुनिया में सबसे ज्यादा रैंक वाले भारतीय पुरुष खिलाड़ी हैं। नई ड्डअझ रैंकिंग के अनुसार, शतर 42वें स्थान पर हैं। 24 वर्षीय मानव ठक्कर से 18 स्थान ऊपर हैं जो अगले सर्वेश्रेष्ठ भारतीय पुरुष खिलाड़ी हैं।

भारत के कारण पाकिस्तान को हुआ करोड़ों का नुकसान

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का फाइनल मुकाबले लाहौर की बजाय दुबई में खेला जाएगा। इस मेगा इवेंट में भारत ने पहले बांग्लादेश, पाकिस्तान, न्यूजीलैंड और सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया को मात देकर फाइनल में एंट्री की। वहीं फाइनल मुकाबले के लाहौर की बजाय दुबई में होने से भारत ने पाकिस्तान का करोड़ों का नुकसान करा दिया है।

दरअसल, सुरक्षा कारणों से टीम इंडिया ने पाकिस्तान की यात्रा करने से इनकार कर दिया था। ऐसे में पहले ही तय हो गया था कि भारतीय टीम अपने सभी मैच दुबई में खेलेगी। इसके अलावा ये भी तय था कि 1 सेमीफाइनल

दुबई में खेला जाएगा। साथ ही अगर भारतीय टीम फाइनल में पहुंचती है तो ये मैच दुबई में खेला जाएगा। अगर भारत फाइनल में नहीं पहुंचता तो ये मुकाबला लाहौर गद्दाफी स्टेडियम में खेला जाना था। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के फाइनल का वेन्यू बदलने से पाकिस्तान को तगड़ा नुकसान हो गया है। चैंपियंस ट्रॉपी की 8 साल बाद वापसी हुई। आखिरी बार ये टूर्नामेंट 2017 में खेला गया था। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में कुल 15 मुकाबले खेले जाने थे। इसके लिए 586 करोड़ रुपये का बजट था। ऐसे में हर मैच के लिए करीब 39करोड़ रुपये का बजट फिक्स था। भारतीय टीम अब तक 4 मैच दुबई में खेल चुकी है। ऐसे में पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड को 156 करोड़ रुपये का नुकसान तो हो चुका है। अब भारतीय टीम फाइनल में पहुंच चुकी है। ऐसे में पाकिस्तान को एक और मैच के लिए 39 करोड़ का नुकसान होगा और पीसीबी का कुल घाटा 195 करोड़ रुपये हो जाएगा।

पाकिस्तान ने फिर उठाया भारत के दुबई में खेलने का मुद्दा

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 की मेजबानी पाकिस्तान के पास है, लेकिन टीम इंडिया ने सुरक्षा कारणों के चलते अपने सभी मैच दुबई में करवाए हैं। जिस कारण टीम इंडिया अपने सभी मैच दुबई में खेल रही है। अब चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का एक आखिरी और खिताबी मुकाबला बचा है। भारतीय टीम और न्यूजीलैंड के बीच 9 मार्च को चैंपियंस ट्रॉफी का फाइनल खेला जाना है। इस मैच से पहले टीम इंडिया के सभी मैच दुबई में खेलने पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। इस मैच से पहले टीम इंडिया के सभी मैच दुबई में खेलने पर लगातार सवाल उठ रहे हैं। पाकिस्तानी मीडिया में ये सवाल उठाए जा रहे हैं कि टीम इंडिया को अपने सभी मैच दुबई में खेलने से फायदा मिल रहा है। इसी मुद्दे पर पाकिस्तानी रिपोर्ट्र्स ने बीसीसीआई उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला से भी सवाल किए। बीसीसीआई के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने पाकिस्तान के 3 दिवसीय दौरे के दौरान बीते दिन यानी 5 मार्च को पाकिस्तानी मीडिया के सवालों का जवाब दिया। उनसे पूछा गया कि भारतीय टीम एक ही वेन्यू में अपने सभी मैच खेल रही हैं, जिससे उन्हें फायदा मिल रहा है। लोगों ने बहुत इतराज किया है कि बाकी टीम इधर-उधर सफर कर रही है और उनके साथ ये भेदभाव हो रहा है। इस सवाल का जवाब देते हुए कोई फेयर-अनफेयर की बात नहीं है। जब ये आईसीसी ने फैसला लिया था तभी ये क्लियर हो गया था कि टीम इंडिया सेंट्रेल मैच दुबई में होंगे। टीम इंडिया की टीम एक ही विकेट पिच पर नहीं निर्भर रहती। टीम इंडिया अपने दम पर खेलती है, अपने खिलाड़ियों के दम पर खेलती है। वहीं जब राजीव शुक्ला से भारत और पाकिस्तान के बीच तटस्थ स्थल पर द्विपक्षीय सीरीज के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि ये बहुत साफ है कि भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय क्रिकेट की बहाली भारत सरकार की मंजूरी के अधीन है।

बांग्लादेश के खिलाड़ी ने लिया संन्यास

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में बांग्लादेश का सफर ग्रुप स्टेज में खत्म हो गया था। टूर्नामेंट अपने आखिरी स्टेज में है। इस बीच बांग्लादेश के अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज मुशफिकुर रहीम ने बुधवार को वनडे क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। वह बांग्लादेश के लिए सबसे ज्यादा वनडे खेलने वाले खिलाड़ी हैं। रहीम ने 19 साल के करियर में 7800 रन बनाए हैं। मुशफिकुर रहीम ने अगस्त 2006 में जिम्बाब्वे के खिलाफ अपना वनडे डेब्यू किया था। अब वह इस फॉर्मेट में सबसे ज्यादा मैच खेलने वाले बांग्लादेशी खिलाड़ी हैं। उन्होंने 274 मैच खेले हैं।

इसमें उन्होंने 36.42 की औसत से 7,795 रन बनाए हैं। इसमें 144 रन का उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर रहा है। इसमें 9 शतक शामिल हैं। विकेटकीपर के रूप में उन्होंने 243 कैच लिए और स्टंप के पीछे 56 स्टंपिंग की। 2005 में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में डेब्यू करने वाले मुशफिकुर 2007 में भारत के खिलाफ बांग्लादेश की ऐतिहासिक जीत में हिस्सा था। उन्हें वनडे क्रिकेट में बमुश्किल एक साल हुआ था। उन्होंने 2007 के क्रिकेट वर्ल्ड कप में भारत के खिलाफ शानदार नाबाद 56 रन बनाए। उनकी इस पारी की बदौलत बांग्लादेश ने वैश्विक मंच पर भारत को चौंका दिया था।

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में इन कप्तानों पर लटकी तलवार

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में जहां कुछ टीमों का प्रदर्शन बेहतरीन रहा तो कुछ टीमों ने निराशा किया। इसमें मेजबान टीम पाकिस्तान का बुरा हाल हुआ, जहां उसे पहले न्यूजीलैंड और फिर भारत के खिलाफ हार झेलनी पड़ी। इसके अलावा इंग्लैंड टीम के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उसे पहले ऑस्ट्रेलिया के हाथों हार झेलनी पड़ी इसके साथ ही उसे अफगानिस्तान ने ही हराया। वहीं अभी टूर्नामेंट खत्म भी नहीं हुआ है और तीन टीमोंके कप्तानों की कप्तानी चली गई। इसमें एक कप्तान तो ऐसा है कि जिसे उसके देश ने टीम से ही बाहर कर दिया। वहीं दो अन्य भी अपने देख के दिग्गज खिलाड़ी हैं, जिनमें से एक को वनडे छोड़ने का ही फैसला करना पड़ा।

चैंपियंस ट्रॉफी शुरू होने से पहले सभी टीमों के कप्तानों ने दम भरा था। सभी का अरमान था कि वह अपनी कप्तानी में एक आईसीसी ट्रॉफी जीतेंगे।

लेकिन टूर्नामेंट का आखिरी पड़ाव आते-आते पता चला कि ये अपनी कप्तानी ही नहीं बचा पाए। सबसे बड़ी गाज तो पाकिस्तान के कप्तान रहे मोहम्मद रिजवान पर ऊपर गिरी है। चैंपियंस ट्रॉफी का होस्ट पाकिस्तान ही है। ऐसे में सभी की नजर थी कि रिजवान की कप्तानी में उनकी टीम कैसा प्रदर्शन करती है। लेकिन पाकिस्तान के लिए टूर्नामेंट काफी निराशाजनक रहा। न तो उनकी टीम चली और न ही रिजवान की कप्तानी चली। आखिर में पाकिस्तान बोर्ड ने रिजवान पर कड़ा फैसला लिया है। फिलहाल उनकी वनडे की कप्तानी तो बच गई है। लेकिन पाकिस्तान के लिए टूर्नामेंट काफी निराशाजनक रहा। न तो उनकी टीम चली और न ही रिजवान की कप्तानी चली। आखिर में पाकिस्तान बोर्ड ने रिजवान पर कड़ा फैसला लिया है। फिलहाल उनकी वनडे की कप्तानी तो बच गई है। लेकिन टी20 में वह कप्तानी के साथ-साथ टीम में जगह भी गंवा बैठे हैं।

इंग्लैंड की टीम भी काफी उम्मीदों के साथ चैंपियंस ट्रॉफी खेलने पहुंची थी। हालांकि, जॉस बटलर की कप्तानी पहले से ही सवालों के घेरे में थी। लेकिन उम्मीद थी कि चैंपियंस ट्रॉफी से उनकी किस्मत बदल जाए। हालांकि, ऐसा कुछ हुआ नहीं। इंग्लैंड की टीम अफगानिस्तान के खिलाफ भी जब मैच हार गई तो बटलर ने कप्तानी छोड़ने का ऐलान कर दिया। बतौर कप्तान उनका आखिरी मुकाबला भी यादगार नहीं बन पाया और आखिर में वह निराशाजनक अंदाज में टीम का साथ छोड़ गए।

स्टीव स्मिथ की बात करें तो वह फुल टाइम कप्तान नहीं थे। पैट कमिंस की अनुपस्थिति में उन्होंने टीम की बागडोर संभाली थी। अपने अनुभव से स्मिथ ने टीम का बढ़िया नेतृत्व किया था। वेस्टइंडीज के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया ने उनकी ही कप्तानी में क्लीन स्वीप किया था। चैंपियंस ट्रॉफी में भी स्मिथ कंगारुओं को सेमीफाइनल तक लेकर आए थे। लेकिन भारत के खिलाफ उनकी टीम को हार का सामना करना पड़ा था।

केन विलियमसन ने रचा कीर्तिमान, ऐसा करने वाले न्यूजीलैंड के पहले बल्लेबाज बने

नई दिल्ली (एजेंसी)। केन विलियमसन ने बुधवार को साउथ अफ्रीका के खिलाफ चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के दूसरे सेमीफाइनल के दौरान एक बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। केन विलियमसन ने 94 गेंद में 102 रन की पारी खेली। उन्होंने अपनी पारी में 10 चौके और दो छक्के लगाए। लाहौर में खेले जा रहे मुकाबले के दौरान केन विलियमसन इंटरनेशनल क्रिकेट में 19000 रन बनाने वाले न्यूजीलैंड के पहले बल्लेबाज बन गए हैं। विलियमसन ने 105 टेस्ट मैचों में 9276 रन, 172 वनडे मैचों में 7149* रन और 93 टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में 2575 रन बनाए हैं। केन विलियमसन को 19 हजार रन पूरे करने के लिए 27 रनों की जरूरत थी और उन्होंने कुछ ही गेंदों के अंदर इस आंकड़े को छू लिया था। 2010 में न्यूजीलैंड के लिए डेब्यू करने वाले केन विलियमसन के नाम वनडे में 14 शतक हैं। केन

विलियमसन न्यूजीलैंड के कप्तान भी रहे।

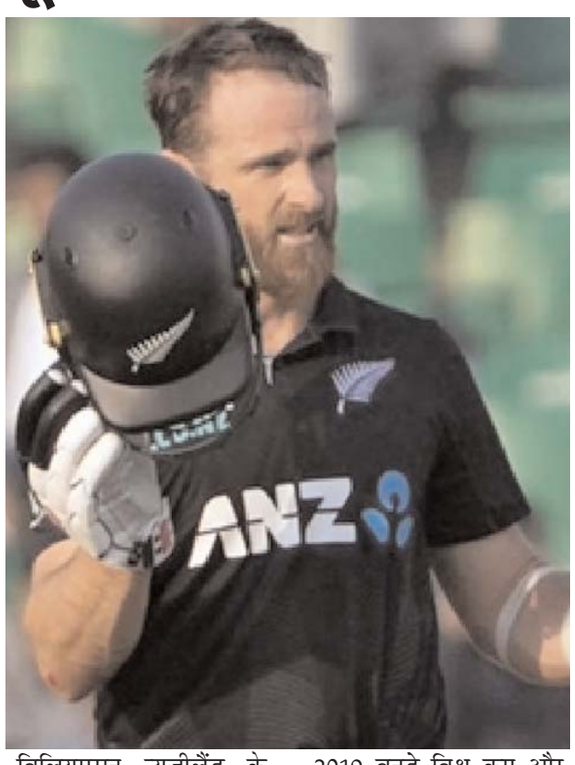

उनकी कप्तानी में न्यूजीलैंड ने 2021 विश्व टेस्ट चैंपियनशिप ट्रॉफी जीती। वे 2019 वनडे विश्व कप और 2021 टी20 विश्व कप के फाइनल में पहुंचे। न्यूजीलैंड ने 2023 वनडे विश्व कप के सेमीफाइनल में जगह बनाई। रॉस टेलर न्यूजीलैंड के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले दूसरे बल्लेबाज हैं। उन्होंने 18199 रन बनाए हैं। केन विलियमसन ने रचिन रविंद्र के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच दूसरे विकेट के लिए 164 रनों की साझेदारी हुई। रचिन ने 32वें ओवर की पहली गेंद पर दो रन लेकर अपना पांचवां एकदिवसीय शतक बनाया। 33वें ओवर में कगिसो रबाडा ने रचिन रविंद्र को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। रचिन रविंद्र ने 101 गेंदों में 13 चौके और एक छक्का लगाते हुए रनों की पारी खेली। इसके बाद केन विलियमसन ने 40वें ओवर की पहली गेंद पर चौका लगाकर अपना 15वां वनडे शतक पूरा किया। इसी ओवर की पांचवीं गेंद पर वियान मुल्डर ने उन्हें अपना शिकार बना लिया। केन विलियमसन ने 94 गेंदों में 10 चौके और दो छक्के लगाते हुए रन बनाए। टॉम लेथम रन बनाकर आउट हुए।

घर में वीडियो कॉल कर बोला अपहरण हो गया, पुलिस ने गर्लफ्रेंड के पास से किया दस्तयाब

प्रमिका के साथ समय बिताने के लिये युवक ने रची खुद के अपहरण की साजिश, मामला दर्ज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्रेम प्रसंग में पड़े युवक ने खुद के अपहरण की साजिश रच डाली। जिसके बाद घर वालों को वीडियो कॉल कर झूठ बोला कि नकाबपोशों ने मुझे बंधक बनाकर मारपीट की है। पुलिस ने गुरुवार को युवक के खिलाफ मामला दर्ज किया है। युवक के अपहरण की जानकारी मिलते ही सिरमौर थाने पहुंचे परिजनों ने युवक के अपहरण की शिकायत की। उसके बाद जब पुलिस ने पूरे मामले की जांच शुरू की तो जो सच सामने निकल कर आया।

पुणे जाने के लिए घर से निकला था: मामले के संबंध में जानकारी देते हुए एडिशनल एसपी अनिल सोनकर ने बताया कि राजगढ़ निवासी मनीष मिश्रा 28 फरवरी को पुणे जाने के लिए घर से निकला था। इसके बाद युवक ने अपने फोन से परिजनों को इटारसी पहुंचने की जानकारी देते हुए वीडियो कॉल करके यह बताया कि उसे चार नकाबपोश बदमाशों ने बंधक बना लिया है और कहीं जंगल में ले जाकर उसके साथ मारपीट कर रहे हैं।

जैसे ही परिजनों को यह सूचना मिली। वे बदहवास सिरमौर थाने पहुंचे और पूरे मामले से पुलिस को अवगत कराया। क्षेत्र में अपहरण की वारदात सुनते ही तुरंत पुलिस ने युवक के मोबाइल नंबर को सर्विलांस में डाला और उसकी तलाश शुरू कर दी।

मोबाइल लोकेशन रामपुर नैकिन दिखी: लेकिन पुलिस उस वक्त हैरान रह गई। जब युवक की मोबाइल लोकेशन रामपुर नैकिन दिखने लगी। लोकेशन मिलते ही सिरमौर पुलिस ने मोबाइल फोन को ट्रेस करना शुरू कर दिया और ट्रेस करते-करते पुलिस रामपुर नैकिन के उस घर में पहुंच गई। जहां युवक अपनी महिला मित्र के साथ रुका हुआ था।

युवक के विरुद्ध अपराध दर्ज: युवक के मिलते ही जब पुलिस ने उससे पूछताछ शुरू की तो उसने बताया कि प्रेम प्रसंग के चलते वो 28 तारीख को सीधा रामपुर नैकिन आ गया था और घर वालों को वीडियो कॉल करके खुद को बंधक बनाए जाने की साजिश रची थी। बहरहाल पुलिस ने युवक के विरुद्ध अपराध दर्ज करते हुए मामले की जांच शुरू की है। जहां उसके खिलाफ वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

पत्नी आरती सिंह रीवा तो पति विक्रम सिंह संभालेंगे मऊगंज एएसपी की कमान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश में पुलिस विभाग में बुधवार, 5 मार्च की रात बड़े स्तर पर सर्जरी की गई। इस फेरबदल में रीवा के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनकर को अजाक एसपी रीवा बनाया गया है। उनकी जगह पन्ना की अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आरती सिंह अब एडिशनल एसपी रीवा की जिम्मेदारी संभालेंगी।

इसमें 8 आईपीएस और 60 एसपीएस अफसरों के ट्रांसफर आदेश जारी किए गए। इन अफसरों के तबादले दो अलग-अलग आदेश से जारी किए गए। एक लिस्ट में 4 अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक स्तर और एक अन्य आदेश में 64 पुलिस अफसरों के तबादला आदेश निकाले गए। जिसमें 8 आईपीएस अफसर शामिल हैं, बाकी अधिकारी राज्य पुलिस सेवा के अधिकारी हैं।

इस तबादले में एक रोचक तथ्य यह है कि आरती सिंह के पति को विक्रम सिंह को भी नई जिम्मेदारी मिली है। जहां छतरपुर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के पद पर कार्यरत विक्रम सिंह को अब मऊगंज का अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बनाया गया है। यानी एक साथ पति पत्नी दोनों को पुलिस विभाग ने नई जिम्मेदारी दी है। आरती सिंह को अनुभवी और तेज तर्रार पुलिस अधिकारी के रूप में जाना जाता है।

ट्रांसपोर्ट नगर में हुई आगजनी में कई दुकाने हो गईं खाक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के सिविल लाइन थाना क्षेत्र के ट्रांसपोर्ट नगर में बीती देर रात हुई आगजनी में कई दुकाने खाक हो गईं। बताया गया कि ट्रांसपोर्ट नगर में पीछे की तरफ अचानक आगजनी की घटना से एक-एक कर कई दुकानों में आग लग गई। जिससे गोमतियों सहित उनके अंदर रखा सारा सामान जलकर खाक हो गया। जब तक दुकान संचालकों को आग लगने की सूचना मिली, तब तक दुकान सहित सामान पूरी तरह से जलकर खाक हो गया। आगजनी की सूचना पर मौके पर पहुंची सिविल लाइन पुलिस ने दमकल वाहन को बुलाया और आग पर काबू पाया।

बता दें कि जिस जगह पर आग लगी, वहां सैकड़ों की संख्या में छोटी दुकानें और गोमतियां संचालित होती हैं। अगर आग पर समय रहते काबू नहीं पाया जाता तो, और बड़ी घटना हो सकती थी।

सड़क हादसे में पिता व पुत्री की मौत, पत्नी गंभीर रूप से घायल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मऊगंज में तेज़ रफ़्तार बाइक अनियंत्रित होकर विद्युत पोल से टकरा गई। हादसे में बाइक सवार पिता व पुत्री की मौत हो गई, जबकि पत्नी गंभीर रूप से घायल है। जिसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। घटना ज़िले के नईगढ़ी थाना क्षेत्र के रामपुर की है। चाकघाट थाने के राजा बांध गांव निवासी जीत कुमार कोल बाइक में सवार हो पत्नी व बेटी के साथ ससुराल रामपुर थाना नईगढ़ी जा रहा था। दोपहर में जैसे ही रामपुर गांव के समीप पहुंचे तभी अचानक युवक बाइक से नियंत्रण खो बैठा और तेज़ रफ्तार बाइक अनियंत्रित होकर सड़क के किनारे लगे विद्युत पोल से टकरा गई। हादसे में तीनों लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की जानकारी होने पर पहुंचे परिजन घायलों को तत्काल उपचार के लिए अस्पताल लेकर आए। जहां गंभीर रूप से घायल युवक और उसकी बेटी की मौत हो गई। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

ऐतिहासिक वेंकट क्लब को रचनात्मक और खेल गतिविधियों का बनेगा केन्द

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने वेंकट क्लब में आयोजित संभागीय समीक्षा बैठक में कहा कि ऐतिहासिक वेंकट क्लब में सभी संभागीय और जिलाधिकारी सदस्य अवश्य बनें। सभी अधिकारी ऐतिहासिक वेंकट क्लब में सक्रिय भागीदारी निभाकर इसे रचनात्मक और खेल गतिविधियों का केन्द्र बनाएं। क्लब में लॉन टेनिस, बिलियर्ड्स, बैडमिंटन तथा अन्य खेलों के साथ जिम की सुविधा उपलब्ध है। इनका उपयोग क्लब के सदस्य के सभी परिवारजन भी उठा सकते हैं। इसकी गतिविधियों के माध्यम से शरीर और मन को स्वस्थ रहने में सहयोग मिलेगा। पुनर्घनत्वीकरण योजना से क्लब का विस्तार कर नवीन भवन का निर्माण किया जा रहा है। इसमें आठ कमरे तथा रेस्टोरेंट की सुविधा उपलब्ध रहेगी। अधिकारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों को अन्य लोगों से व्यंकट क्लब में मिलने-जुलने का अच्छा अवसर प्राप्त होगा। कमिश्नर ने कार्यपालन यंत्री हाउसिंग बोर्ड को नवीन भवन का निर्माण शीघ्र पूरा कराने तथा फर्नीचर के लिए इस वर्ष की कार्ययोजना में प्रस्ताव शामिल करने के निर्देश दिए। कमिश्नर ने कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग को पुराने भवन के सुधार के लिए एक सप्ताह में प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिए। बैठक में डीआईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि क्लब में रेस्टोरेंट की सुविधा तत्काल शुरू की जाए। साथ ही क्लब को प्रदेश के अन्य क्लबों से संबद्धता प्राप्त करने के प्रयास करें। कमिश्नर तथा डीआईजी ने वेंकट क्लब का भ्रमण करके इसमें संचालित गतिविधियों एवं सुविधाओं का जायजा लिया।

बैठक में अतिथियों का स्वागत करते हुए वेंकट क्लब के सचिव डॉ आनंद सिंह ने कहा कि वेंकट क्लब की स्थापना 1937 में रीवा के तत्कालीन महाराजा गुलाब सिंह ने की थी। इसमें धीरे-धीरे विभिन्न सुविधाओं का विकास किया गया। क्लब में वर्तमान में सभी प्रमुख इंडोर गेम खेलने की सुविधा है। इसमें वर्तमान में 390 सदस्य हैं। आजीवन सदस्य, अधिकारियों की सदस्यता तथा अन्य व्यक्तियों की सदस्यता के लिए अलग-अलग मापदण्ड निर्धारित हैं। इनके अनुसार सदस्यता दी जाती है। सदस्यता शुल्क से प्राप्त राशि से क्लब की गतिविधियाँ संचालित होती हैं। क्लब के विकास में सांसद निधि, विधायक निधि, जनप्रतिनिधियों एवं व्यवसाइयों से भी सहयोग मिला है। सभी अधिकारियों द्वारा क्लब की सदस्यता लेने से इस क्लब की गरिमा बढ़ेगी। नगर निगम द्वारा वेंकट क्लब की भूमि पर बने स्वीमिंग पूल का सुधार कराकर उसे शीघ्र प्रारंभ किया जा रहा है। वेंकट क्लब के सदस्यों को रियायती दर पर स्वीमिंग पूल के उपयोग की सुविधा दी जाए।

बैठक में कार्यपालन यंत्री हाउसिंग बोर्ड अनुज प्रताप सिंह ने बताया कि नवीन भवन का निर्माण 30 जून तक पूरा कर लिया जाएगा। इसमें फर्नीचर तथा साज-सज्जा के लिए 68 लाख रुपए का प्रस्ताव पुनर्घनत्वीकरण योजना की इस वर्ष की कार्ययोजना में शामिल किया गया है। इसकी स्वीकृति मिलते ही फर्नीचर उपलब्ध कराया जाएगा। कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग ने बताया कि पुराने भवन में सुधार के लिए प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है। बैठक में क्लब की स्थाई समिति की सदस्यता में विस्तार पर भी चर्चा की गई। बैठक में आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर, एडीएम सपना त्रिपाठी, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी, एसडीएम हुजूर वैशाली जैन, संयुक्त कलेक्टर श्रेयस गोखले तथा सभी संभागीय और जिलाधिकारी उपस्थित रहे।

सीईओ जिला पंचायत ने जवा में ग्रामीण विकास कार्यों की समीक्षा की

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर की अध्यक्षता में जनपद पंचायत जवा में गत दिवस खण्ड स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत आवास प्लस 2.0 में सर्वे किये जाने की अंतिम तिथि तक पात्र समस्त हितग्राहियों के नाम सर्वे सूची में जोडने के निर्देश दिये गये हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 में प्राप्त लक्ष्य का शत-प्रतिशत पंजीयन एवं संबंधित ग्राम पंचायत के सीएफटी प्रभारी (उपयंत्री/पंचायत समन्वयक अधिकारी) द्वारा सत्यापन तीन दिवस मे पूर्ण करने हेतु निर्देश दिये गये। प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 में पंजीकृत पात्र हितग्राहियों के अतिरिक्त अपात्र हितग्राहियों के विलोपन की प्रक्रिया एवं डुप्लीकेट जाबकार्ड से संबंधित हितग्राहियों की जानकारी निर्धारित प्रारूप मे आगामी तीन दिवस मे जिला पंचायत कार्यालय मे जमा करने के निर्देश दिये गये। बैठक में जिला पंचायत सीईओ द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण अंतर्गत न्यूनतम प्रगति वाले पंचायतों के सचिव/ग्राम रोजगार सहायक एवं संबंधित सीएफटी प्रभारियों का माह मार्च 2025 का वेतन प्रगति संतोषजनक न होने तक रोकने के निर्देश मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत जवा को दिये गये। अतिरिक्त कार्यक्रम अधिकारी मनरेगा जनपद पंचायत जवा को मस्टर रोल से संबंधित समस्याओं के निराकरण कराए जाने हेतु निर्देश दिये गये।

उप मुख्यमंत्री करेंगे जनजातीय आनंद उत्सव का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल 8 मार्च को शाम 6 बजे जनजातीय आनंद उत्सव का शुभारंभ करेंगे। उत्सव का आयोजन कृष्णा राजकपूर ऑडिटोरियम रीवा में किया जा रहा है। समारोह में प्रवेश निःशुल्क है। समारोह की अध्यक्षता सांसद जनार्दन मिश्र करेंगे। समारोह में ग्वालियर की नृत्यांगना अपर्णा सराठे शाम 7 बजे कत्थक नृत्य प्रस्तुत करेंगी। इसके बाद छतरपुर की लोक गायिका कविता शर्मा शाम 7.30 बजे बुंदेली लोकगीतों की प्रस्तुति देंगी। समारोह में रात 8 बजे कल्याणी मिश्रा बघेली लोकगीतों की प्रस्तुति देंगी। समारोह में उज्जैन की गायिका स्नेहा गहलौत मालवी गीत तथा भोपाल की कलाकार मणिका पाण्डेय बनारसी ठुमरी एवं दादर की प्रस्तुति देंगी। समारोह का समापन रात 9 बजे होगा। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने आमजनता से जनजातीय आनंद उत्सव कार्यक्रम से लाभ उठाने की अपील की है।

निरोगी काया अभियान के जिले के प्रतिदिन के स्क्रीनिंग का लक्ष्य

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये हैं कि निरोगी काया अभियान के जिले के प्रतिदिन के स्क्रीनिंग लक्ष्य को पूरा करते हुए लक्षित व्यक्तियों की शत प्रतिशत स्क्रीनिंग किया जाना सुनिश्चित करायें। उन्होंने कार्ययोजना अनुसार विकासखण्डवार अभी तक किये गये कार्य की समीक्षा की तथा आगामी दिवसों की कार्ययोजना की जानकारी प्राप्त की।

कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने निर्देश दिये कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों की स्क्रीनिंग की समस्त जानकारी पोर्टल में फीड करायें तथा चिन्हित हितग्राहियों को दवाईयों की उपलब्धता भी सुनिश्चित करायें। उन्होंने कहा कि जिन विकासखण्डों में बैकलाग हो उसे पूरा कराते हुए प्रतिदिवस का लक्ष्य पूर्ण करें। कलेक्टर ने कहा कि इस महत्वपूर्ण अभियान की भोपाल स्तर से नियमित मानीटरिंग हो रही है साथ ही उप मुख्यमंत्री जी भी प्रतिदिवस जिले की प्रगति के बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे हैं अतः इसमें किसी भी स्तर पर शिथिलता क्षम्य नहीं होगी।

कलेक्टर ने आयुष्मान भारत योजनान्तर्गत 70 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों के कार्ड बनाने के अभियान में प्रगति धीमी होने पर अप्रसन्नता व्यक्त की तथा इसे गति देने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि जिले में अभी भी 77 हजार से अधिक व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड बनाये जाने हैं। अभियान अवधि में ग्राम रोजगार सहायक, आशा कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता तथा सीएचओ ग्राम पंचायत भवन में बैठकर पात्र व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड बना रहे है। शेष व्यक्ति यदि किसी कारणवश ग्राम पंचायत भवन आने में असमर्थ हैं तो घर-घर जाकर उनके कार्ड बनायें। जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तथा बीएमओ मिलकर अभियान के दौरान शत-प्रतिशत पात्र व्यक्तियों के आयुष्मान कार्ड बनवाएं। आयुक्त नगर निगम तथा सभी मुख्य नगरपालिका अधिकारी शहरी क्षेत्रों के शेष बचे व्यक्तियों के भी आयुष्मान कार्ड बनाने के लिए वार्डवार शिविर लगाएं।

उल्लेखनीय है कि जिले में 20 मार्च से 31 मार्च तक निरोगी काया अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत 30 वर्ष से अधिक आयु के सभी व्यक्तियों की डायबिटीज, ब्लडप्रेशर, नॉन अल्कोहलिक फैटी लीवर बीमारी की जाँच निःशुल्क की जाएगी। इस संबंध में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ संजीव शुक्ला ने बताया कि अभियान में उप स्वास्थ्य केन्द्र, शहरी और ग्रामीण प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा संजीवनी क्लीनिक में स्वास्थ्य जाँच की सुविधा है। जाँच के लिए डॉक्टर, चिकित्साकर्मी एवं एएनएम को तैनात किया गया है। जाँच के दौरान चिन्हित बीमारियों से पीड़ित पाए जाने पर रोगियों की जानकारी एनसीडी पोर्टल पर दर्ज कर उनका पंजीयन किया जाएगा। सभी रोगियों को तत्काल आवश्यक दवाएं दी जाएंगी। पोर्टल के माध्यम से रोगियों के स्वास्थ्य सुधार का लगातार फालोअप किया जाएगा।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि रोगियों के डायबिटीज, ब्लडप्रेशर तथा अन्य जाँचों के लिए आवश्यक उपकरण सभी चिकित्सा केन्द्रों में उपलब्ध करा दिए गए हैं। अभियान के दौरान जिन व्यक्तियों का बाडी मॉस इंडेक्स 23 से अधिक है तथा कमर का घेरा महिलाओं में 80 सेंटीमीटर तथा पुरूष में 90 सेंटीमीटर अधिक है उनकी फाइब्रो स्कोर, खून की जाँच डाक्टरों द्वारा की जाएगी। अभियान को सफल बनाने के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्तर पर मेडिकल आफीसर तथा विकासखण्ड स्तर पर बीएमओ को जिम्मेदारी सौंपी गई है। अभियान के दौरान रीवा शहर में तीन प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों तथा 10 मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिकों में 30 वर्ष से अधिक के सभी व्यक्तियों की जाँच की जाएगी। बैठक में सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर सहित बीएमओ व स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

500 रुपये देकर बस में कराई गई थी पत्थरबाजी

पुलिस ने किया खुलासा, दो नाबालिक सहित सहयोगी को किया गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के चोरहटा थाना क्षेत्र अंतर्गत आईटीआई के सामने तीन दिन पूर्व रीवा से इंदौर जा रही विजयंत ट्रेवल्स की बस पर किए गए हमले के दौरान चिकित्सक की मौत के बाद पुलिस ने वारदात का सनसनीखेज खुलासा किया है। वारदात को अंजाम देने वाले दो नाबालिक छात्र निकले हैं जिन्होंने महज 500 रुपये के लिए बस में पत्थरबाजी की थी। वहीं पुलिस ने एक अन्य युवक को भी गिरफ्तार कर लिया है। जबकि वारदात का मास्टर जय भवानी ट्रेवल्स बस का संचालक फरार है जिसकी तलाश की जा रही है। घटनाक्रम का खुलासा करते हुए चोरहाटा थाना प्रभारी आशीष मिश्रा ने जानकारी देते हुए बताया कि तीन दिन पूर्व रीवा से इंदौर जा रही विजयन ट्रेवल्स की बस पर पत्थरबाजी कर हमला करने वाले दो नाबालिक छात्रों को गिरफ्तार कर लिया गया है जिन्होंने दिव्यां सिंह नामक युवक के कहने पर बस में पत्थरबाजी की वारदात को अंजाम दिया था।

पकड़े गए नाबालिक ने बताया कि उन्होंने यह काम मात्र 500 रुपये के लिए किया था पुलिस ने दोनों नाबालिकों की निशानदेही पर दिव्यां सिंह को भी गिरफ्तार कर लिया है। वही दिव्यां सिंह ने पुलिस को बताया कि वारदात को अंजाम देने के लिए जय भवानी ट्रेवल्स के संचालक दर्शन सिंह द्वारा बोला गया था। फिलहाल पुलिस अब दर्शन सिंह की भी तलाश कर रही है। बताया गया कि बसों में सवारी की प्रतिस्पर्धा को लेकर लगातार यह विवाद हो रहा था। जिसके चलते तीन दिन पूर्व रीवा से इंदौर जा रही विजयंत ट्रेवल्स की बस पर बाइक से आए दो नकाब पशों ने पत्थरबाजी करते हुए हमला कर दिया। था इस दौरान बस में चालक की पीछे की सीट में बैठे सिरमौर अस्पताल में पदस्थ चिकित्सक डॉक्टर हीरामणि कोरी निवासी पटेहरा की मौत हो गई थी। पुलिस ने इस मामले में हत्या का प्रकरण दर्ज कर पत्थरबाजी करने वाले दो नाबालिक छात्र सहित उनके सहयोगी को गिरफ्तार कर लिया है ।

श्रीमदभागवत कथा के आयोजन की तैयारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के नजदीक ग्राम अमवा में सिद्ध पीठ श्री पुरनमानाथ धाम में आगामी 8 से 15 अप्रैल तक भागवत यात्रा परिवार श्री धाम वृंदावन में आश्रम निर्माण के सहायतार्थ श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में बताया गया है कि भागवत यात्रा परिवार एवं समस्त जनमानस द्वारा सुप्रसिद्ध भागवताचार्य आशीषाचार्य जी महाराज वृदावनोपासक के मुखारविंद से धारा प्रवाह श्रीमद् भागवत कथा आयोजन किया जायेगा । जिसका कथा का सीधा प्रसारण यूट्यूब चैनल एवं फेसबुक पेज पर भी देखा जा सकेगा। इस आयोजन में एक साथ हजारों लोग बैठ सकेंगे एवं वाहन पार्किंग की व्यवस्था भी की गई है। आयोजन का समापन 15 अप्रैल को लघु महायज्ञ पूर्णाहुति हवन यज्ञ एवं भंडारा के साथ समापन होगा।

जिला स्तरीय विकसित भारत युवा सांसद का होगा आयोजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशानुसार विकसित भारत युवा सांसद का आयोजन अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय में किया गया है। कार्यक्रम के आयोजन हेतु युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर हुए हैं । विकसित भारत युवा संसद कार्यक्रम में चयनित विषय पर युवा प्रतिभागी को अपने विचार रखने का अवसर प्रदान किया जाएगा । इस प्रतियोगिता हेतु युवाओं की आयु 24 फरवरी 2025 को 18 से 25 वर्ष निर्धारित की गई है। प्रतियोगिता हेतु युवाओं को माय भारत पोर्टल पर पंजीयन आवश्यक है।

रीवा नोडल के अंतर्गत रीवा सीधी मऊगंज सिंगरौली जिले रखे गए हैं। माय भारत पोर्टल पर पंजीकृत होने के पश्चात ही इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी का अवसर प्रदान किया जाएगा। प्रतियोगिता के पंजीयन 9 मार्च तक माय भारत पोर्टल पर किए जा सकते हैं तथा पोर्टल पर बनाए गए कार्यक्रम के माध्यम से आवेदन करना होगा।

कांग्रेस ने मंत्री प्रहलाद पटेल का शिल्पी प्लाजा में किया पुतला दहन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश सरकार के मंत्री प्रहलाद पटेल द्वारा जनता जर्नादन के प्रति अनर्गल बयान दिया गया जिसमें उनके द्वारा जनता द्वारा सरकार से की जाने वाली मांगों को भीख मांगना बताया गया है। यह आमजन का अपमान है। इस बयान के विरोध में मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी जी के निर्देशन पर पूरे प्रदेश में ब्लाक स्तरीय पुतला दहन का कार्यक्रम के तारतम्य में आज रीवा विधानसभा के तीनों ब्लाकों के अध्यक्षों द्वारा संयुक्त रूप से पुतला दहन शहर के बीचों बीच स्थित शिल्पी प्लजा में किया गया। शहर अध्यक्ष लखनलाल खण्डेलवाल ने उक्त पुतला दहन कार्यक्रम मे कहा कि मंत्री प्रहलाद पटेल अपने मंत्री पद से इस्तिफा दे और प्रदेश की जनता से सामुहिक रूप से माफी मांगें। चिरहुला ब्लाक रामकीर्ति शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के लोग सत्ता के नशे में चूर होकर अनर्गल बयान कर रहे। चुनाव के समय जनता को भगवान कहने वाले भाजपाईयों का असली चेहरा सामने आ रहा है। 20 वर्ष से मध्यप्रदेश में शासन कर रही भाजपा सरकार पूरी तरह से अंधी हो गयी है, और प्रदेश की भोली भाली जनता अब उसको भीखारी दिखने लगी हैं सत्ता के मद में सरकार व उसके मंत्री जनता से किये गये वादों पर कुछ कहने की हालत में नहीं है। कांग्रेस पार्टी ने मांग की है कि मंत्री प्रहलाद पटेल अपने पद से तत्काल इस्तिफा दें। पुतला दहन के कार्यक्रम में मुख्य रूप से शहर अध्यक्ष लखनलाल खण्डेलवाल, संगठन मंत्री सज्जन पटेल, अल्पसंख्यक जिलाध्यक्ष मुस्तहाक खान, ब्लाक अध्यक्ष चिरहुला रामकीर्ति शर्मा, ब्लाक अध्यक्ष बोदाबाग शिवेन्द्र प्रताप सिंह, ब्लाक अध्यक्ष ढेकहा अखिलेश द्विवेदी काकू मण्डलम अध्यक्ष केशव वर्मा, मुर्तजा अंसारी, नूर अफजल, अनवर अंसारी, राजेश तिवारी पप्पी, संतोष शुक्ला, जितेन्द्र मिश्रा जित्तू संतोष मिश्रा, जय शंकर पाण्डेय, आदि कांग्रेस जन उपस्थित रहें।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।